www.nacoonline.org

NACO समाचार

राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन
की समाचार पत्रिका

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
भारत सरकार

खंड V अंक 4
अक्तूबर–दिसम्बर, 2009

रेड रिबन एक्सप्रैस:
और अधिक सेवाओं, जानकारी तथा क्रियाकलापों सहित वापिस

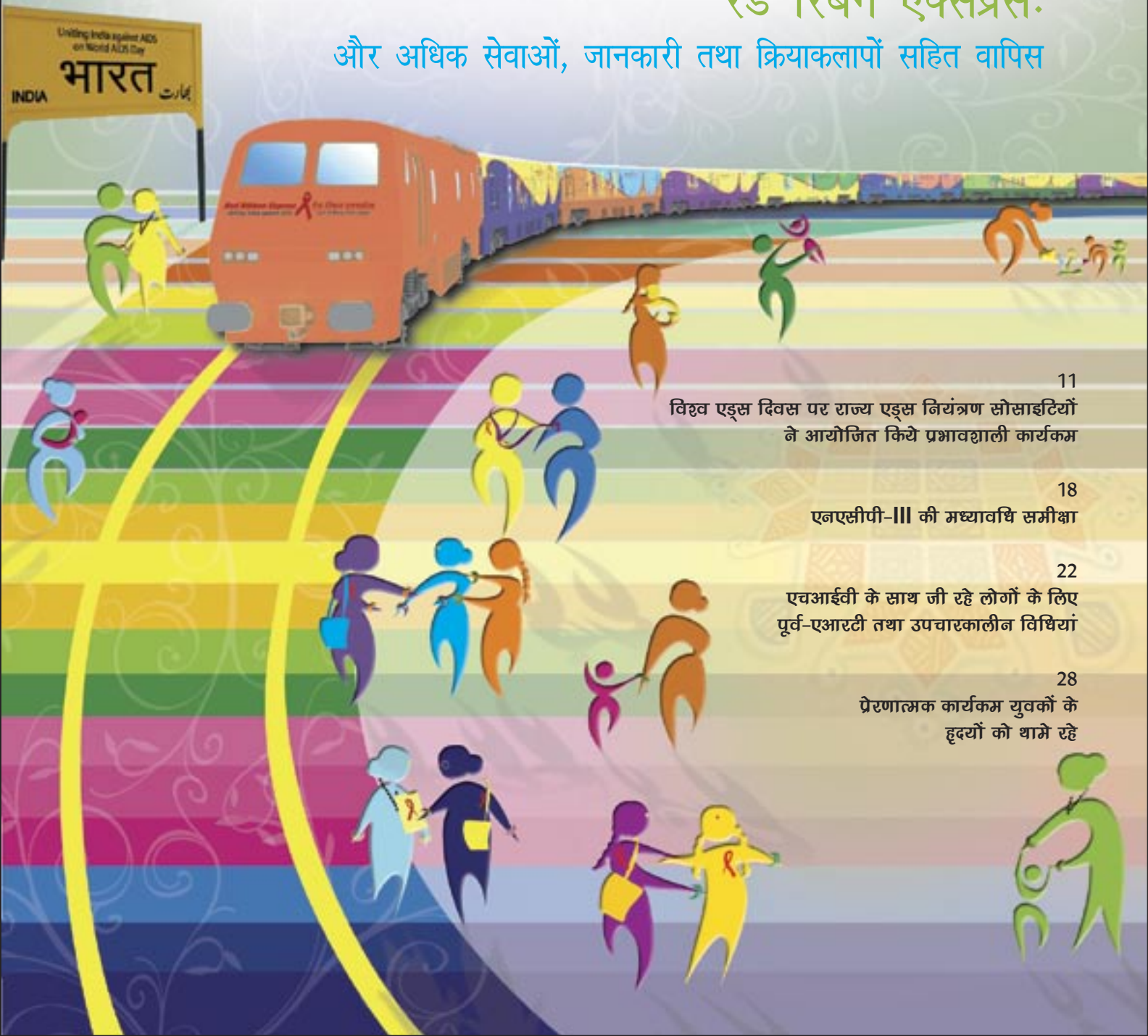

11
विश्व एड्स दिवस पर राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटियों ने आयोजित किये प्रभावशाली कार्यक्रम

18
एनएसीपी-III की मध्यावधि समीक्षा

22
एचआईवी के साथ जी रहे लोगों के लिए पूर्व-एआरटी तथा उपचारकालीन विधियां

28
प्रेरणात्मक कार्यक्रम युवकों के हृदयों को थामे रहे

पाठकों के पत्र

मैंने और मेरे मित्रों ने रेड रिबन एक्सप्रैस के अहमदाबाद में पड़ाव के दौरान वहां का दौरा किया। यह उन छात्रों के लिए एक बड़ा आकर्षण था जिन्हें ऐसे अन्य मुद्दों पर जिनके बारे में वे जानना चाहते थे जानकारी प्राप्त हुयी। दृश्य प्रदर्शन, परामर्शी सत्र और सांस्कृतिक कार्यक्रम बहुत अच्छी तरह तैयार और आयोजित किए गए थे।

भारी भीड़ को देखने से यह साफ हो जाता है कि लोग आधुनिक रोगों की बाबत और अधिक जानना चाहते हैं। लोग अपने स्वास्थ्य को लेकर अधिक जागरूक हो गए हैं। किसी एक सरकारी स्वास्थ्य केंद्र में एक स्थायी प्रदर्शनी का आयोजन एक उत्तम विचार होगा, जिससे कि लोग समय–समय पर स्वयं अपनी जानकारी अद्यतन कर सकें और साथ ही एचआईवी/एसटीआई/आरटीआई/एचआईएनआई के लिए परीक्षण सुविधाओं और उपचार के बारे में नवीनतम जानकारी प्राप्त कर सकें।

पूजा बक्शी
जैव प्रौद्योगिकीविद
अहमदाबाद

• • •

मैं संयोग से छुट्टी पर पूर्वोत्तर में गया हुआ था और मैंने मिज़ोरम में एक संगीत प्रतियोगिता में भाग लिया। यह प्रतियोगिता नाको – यूएनओडीसी के मल्टीमीडिया कार्यक्रम का हिस्सा थी जिसका उद्देश्य नशीली दवाओं और एचआईवी के विषय पर संवेदनशीलता और जागरूकता पैदा करना था।

मेरे विचार से ऐसे माध्यम का प्रयोग करना एक उत्तम विचार था जिसके साथ युवा लोग जुड़े होते हैं। देश के आरपार इस तरह के कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए क्योंकि आज के समय में युवकों का एक ऐसा वर्ग है जो दिशाहीन है और जिसे इस तरह के प्रभावों का जोखिम है। ऐसे लोग यह समझे बिना पार्टियों में नशीली दवाओं के प्रयोग और जोखिमपूर्ण व्यवहार में प्रवृत्त होकर अपने और दूसरों के जीवन को संकट में डाल रहे हैं।

युवकों की ऊर्जा को रचनात्मक कार्यों में लगाना, उनके सामने अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करना और उनके जीवन में एक सार्थकता का अहसास पैदा करना एक ऐसी जिम्मेदारी है जिसे केवल माता–पिता तथा शैक्षिक संस्थानों द्वारा ही नहीं, बल्कि नागरिक समाज के संगठनों, एनजीओ तथा प्रभाव डालने वाले अन्य संस्थानों द्वारा मिल कर निभाना चाहिए।

अर्जुन श्रीवास्तव
स्वतंत्र फिल्म निर्माता,
मुंबई

• • •

मैं अनाथों तथा असुरक्षित बच्चों अथवा एचआईवी से संक्रमित और देखभाल गृहों में रह रहे व्यक्तियों के लिए कुछ स्वयंसेवी कार्य करना चाहती हूं। क्या ऐसे संगठनों अथवा एनजीओ की कोई सूची है जिसमें से मैं दिल्ली में कोई ऐसी संस्था चुन सकूं, जहां मैं ऐसा काम कर सकूं? क्या ऐसे लोगों के साथ सार्थक रूप से वैचारिक आदान–प्रदान करने के लिए किन्हीं विशेष कौशलों तथा समझ की जरूरत होती है?

नाको समाचार एक अत्यंत सूचनाप्रद दस्तावेज है जो एचआईवी के संसार से जुड़े ढेर सारे डाटा, क्रियाकलापों और योजनाओं का मिलान करता है। इसका आम लोगों के बीच व्यापक रूप से प्रचार किया जाना चाहिए ताकि वे एचआईवी/एड्स के साथ रहने वाले लोगों के प्रति समानुभूति रख सकें तथा ऐसे लोग रोजमर्रा के जीवन में जिन चुनौतियों और कठिनाइयों का सामना करते हैं, उनके बारे में जान सकें।

साधना बक्शी
नई दिल्ली

एआरटी लेने वाले रोगियों की संख्या*

नाको की सहायता से संचालित एआरटी केंद्र	282,526
इंटरसेक्टोरल साझेदार	2479
जीएफएटीएम राउंड II केंद	2489
एनजीओ क्षेत्र	474
कुल योग	287,968

*30 नवम्बर, 2009 तक

कृपया अपने लेख और सुझाव भेजकर नाको समाचार को अधिक सहभागितापूर्ण बनाने में हमारी मदद करें। हमें निम्न विषयों पर अपने लेख भेजें:

- केस स्टडीज
- क्षेत्रीय कार्यक्रमों से संबंधित टिप्पणियां और अनुभव
- समाचार
- कथाऐं
- प्रेरक प्रसंग
- सुझाव

नाको समाचार के पिछले अंक और एचआईवी/एड्स पर अधिक जानकारी के लिए लॉग ऑन करें:
www.nacoonline.org
या ई–मेल करें:
mayanknaco@gmail.com

– संपादक

महानिदेशक की कलम से

नाको समाचार के लिए अपने पहले संदेश के माध्यम से अपने सभी साझेदारों, निधिदाताओं, राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटियों तथा विकासात्मक क्षेत्र के मित्रों के साथ जुड़ जाने में मुझे अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

यह अंक इस अर्थ में विशेष है कि यह आपको विश्व एड्स दिवस के मौके पर जोकि एचआईवी/एड्स के क्षेत्र में कार्यरत सभी व्यक्तियों के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है, किए गए क्रियाकलापों का एक संक्षिप्त विवरण उपलब्ध कराता है। इस दिवस के आयोजन के लिए हमें वैश्विक स्तर पर मीडिया का जो सहयोग प्राप्त हुआ है, वह इस बात का प्रमाण है कि एचआईवी/एड्स से संबंधित चर्चा अब उन लोगों के बीच, जिनके पास अधूरी जानकारी होती है, खुसर–पुसर के रूप में नहीं बल्कि खुल कर होती है।

इस विषाणु से संक्रमित और प्रभावित हो चुके लोग जिन अनेक चुनौतियों से जूझते हैं, विश्व उनके प्रति जागृत हो चुका है और वह इस समस्या को अन्य चिरकारी रोगों के तरह स्वीकार करने का इच्छुक है। विश्व एड्स दिवस पर प्रत्येक राज्य ने क्या किया, हम उन प्रतिबिंबों और ब्यौरों की इस अंक में एक व्यापक झांकी प्रस्तुत कर रहे हैं।

2007–08 में अपनी सफल यात्रा के बाद रेड रिबन एक्सप्रैस 'लोकप्रिय मांग' पर अपने दूसरे अवतार में लौटकर आई है। यूपीए की माननीय अध्यक्ष तथा राजीव गांधी प्रतिष्ठान की अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी द्वारा 1 दिसंबर, 2009 को रवाना की गयी यह एक्सप्रैस इस बार बहुत कुछ लेकर आई है। एक कोच राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन पर जोड़ा गया है जिसमें टीबी, मलेरिया, एच।एन। तथा प्रजनन और बाल स्वास्थ्य सेवाओं की जानकारी दी गयी है। इसके अलावा एचआईवी टेस्ट, यौन रोगों की चिकित्सा और सामान्य जांच सेवाएं भी उपलब्ध कराई जा रही है। हमें आशा है कि हम और अधिक जानकारी और सेवाओं सहित, सुरक्षित व्यवहारों की जानकारी देते हुए और भी बड़ी जनसंख्या तक पहुंचेंगे।

राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम, एनएसीपी–III की नवंबर में की गई संयुक्त मध्यावधि समीक्षा एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया थी जिसने एनएसीपी–III कार्यान्वित किए जाने में पेश आने वाली चुनौतियों का अध्ययन किया और उनकी ओर ध्यान देने हेतु सिफारिशें कीं। यह जानना सुखद था कि हम रास्ते पर हैं और हमने इस महामारी को आगे नहीं बढ़ने दिया है और हम अब मिलकर कमियों की ओर ध्यान दे रहे हैं। मध्यावधि के दौरान किए गए अनेक अध्ययनों की भी समीक्षा की गयी और अब ऐसे क्षेत्रों की ओर ध्यान दिया जायेगा जो अनदेखे रह गए हैं।

अपने एआरटी संबंधी लेख में हमने 'अत्यंत सक्रिय एंटीरिट्रोवाइरल चिकित्सा' (एचएएआरटी) और वह किस तरह एचआईवी संक्रमणों की और अधिक कारगर ढंग से देखभाल कर रही है, इस बाबत आपको अद्यतन जानकारी प्रदान की है। एनएसीपी–III का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि एचआईवी/एड्स के साथ जी रहे सभी लोगों को यथाशीघ्र एआरटी उपलब्ध कराई जाए और वे अपनी सामान्य भूमिकाओं तथा दायित्वों का निर्वाह कर सकें।

सृजनात्मकता अनेक रूपों में अभिव्यक्त की जाती है और अपनी प्रचुर प्रतिभा के बल पर, पूर्वोत्तर क्षेत्र जटिल संदेशों को सहज रूप में सबसे सरल तरीकों से व्यक्त करता रहा है। मिज़ोरम और नागालैंड में रेड रिबन युवा आइकॉन पुरस्कार समारोह में एक–दूसरे को जोड़ने वाले कारक के रूप में संगीत का प्रयोग किया गया। इसने युवकों को जोखिमों से अवगत कराने के लिए एक साझा मंच पर जोड़ा।

नाको समाचार एचआईवी समुदाय की आवाज है। अपना फीडबैक और विचार निःसंकोच रूप से भेजें। आशा है कि हम पहले की भांति मिलकर काम करते रहेंगे। नव वर्ष 2010 के लिए आपको हार्दिक शुभकामनाएं।

के. चंद्रमौली
सचिव, एड्स नियंत्रण विभाग और
महानिदेशक, नाको
स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय,
भारत सरकार

रेड रिबन एक्सप्रैस

और अधिक सेवाओं, जानकारी तथा क्रियाकलापों सहित वापिस

आरआरई ने 2008 में किया गया अपना वायदा पूरा किया है और वह एक विस्तारित कार्यसूची सहित लौटकर आई है जिसमें एच1एन1, मलेरिया, प्रजनन स्वास्थ्य तथा सामान्य स्वास्थ्य शामिल है

रेड रिबन एक्सप्रैस, चरण–II को रवाना करती हुई यूपीए की माननीय अध्यक्षा श्रीमती सोनिया गांधी

यूपीए की माननीय अध्यक्ष तथा राजीव गांधी प्रतिष्ठान की अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी ने विश्व एड्स दिवस के मौके पर अर्थात 1 दिसंबर, 2009 को सफदरजंग रेलवे स्टेशन से रेड रिबन एक्सप्रैस को रवाना किया। चमकीली, रंगदार तथा स्थानीय और परंपरागत रंगों से ओतप्रोत आरआरई देश के दूरदराज क्षेत्रों में जानकारी और सेवाएं लेकर पहुंचेगी।

विभिन्न साझेदारों और हितधारकों को लिए हुए यह रेलगाड़ी साझेदारी, सहयोग की एक कथा है। साथ ही यह साझा लक्ष्यों और उद्देश्यों की पूर्ति की दिशा में मिलकर कार्यरत एक राष्ट्र का वास्तविक निदर्शन है। इसमें एक अधिक स्वस्थ राष्ट्र को रूप देने की शक्ति है।

राजीव गांधी प्रतिष्ठान, राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन, रेल मंत्रालय, यूनिसेफ

अपने दूसरे दौरे में लौटकर आरआरई 22 राज्यों के 152 पड़ाव स्टेशनों पर अतिरिक्त सेवाएं तथा और अधिक जानकारी लेकर आई है

तथा अन्य हितधारकों के साथ मिलकर राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन (नाको) द्वारा कार्यान्वित आरआरई अपना दूसरा सफर 1 दिसंबर, 2010 को पूरा करेगी।

आरआरई द्वारा अपने वायदे की पूर्ति

2007–08 के अपने पहले दौरे के दौरान आरआई का, जोकि एचआईवी/एड्स का सर्वाधिक विशाल अभियान है प्रत्येक पड़ाव स्टेशन पर बड़े उत्साह, रुचि और जोरशोर से स्वागत किया गया था। दूरस्थ, दुष्कर क्षेत्रों में इसका प्रभाव इन अर्थों में साफ देखा जा सकता था कि लोगों का यह दावा था कि उन्होंने ऐसा कार्यक्रम पहले कभी नहीं देखा था। हजारों लोगों ने आरआरई से और अधिक जानकारी, सेवाओं और मेलजोलपूर्ण क्रियाकलापों के साथ लौटने का अनुरोध किया था।

अपने इस वायदे की पूर्ति करते हुए दूसरे दौर में लौटकर आरआरई 22 राज्यों के 152 पड़ाव स्टेशनों पर जानकारी, शिक्षा और संचार (आईईसी) तथा गंभीर विषयों की मनोरंजक प्रस्तुति संबंधी ऐसे क्रियाकलाप लेकर आई है जोकि एचआईवी/एड्स से संबंधित सभी पक्षों की बाबत लोगों को जानकारी और शिक्षा प्रदान करेंगे। इसका उद्देश्य जोखिमपूर्ण व्यवहार में कमी लाना, संक्रमण और इसके फैलाव के बारे में भ्रांतियां दूर करना, लोगों को परीक्षण कराने, जिससे कि वे अपनी एचआईवी स्थिति पता लगा सकें, उपचार प्राप्त करने और उसका अनुपालन करने तथा समाज में एचआईवी के साथ सकारात्मक रूप से जीना सीखने के लिए प्रोत्साहित करना है। इस बार नाको के साथ एनआरएचएम भी जुड़ गया है और एक कोच में टीबी तथा एच1 एन1, मलेरिया, प्रजनन स्वास्थ्य और बाल सेवाओं की एक प्रदर्शनी प्रस्तुत की गई है। एचआईवी परीक्षण, एसटीआई उपचार, सामान्य स्वास्थ्य जांच सेवाएं प्लेटफार्मों पर शामिल कर दी गई हैं। कई स्थानों पर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए सचल स्वास्थ्य वैन उपलब्ध कराई गई है। जो लोग रेलगाड़ी देखने नहीं आये उन तक आईईसी वैनों और आरआरई के मार्ग में आने वाले जिलों के गांवों के लोक कला समूहों के माध्यम से पहुंच बनाई जा रही है।

अनूठी बहुक्षेत्रीय पहल

देश के दूरस्थ और पहाड़ी क्षेत्रों तक स्वास्थ्य संदेश पहुंचाने के प्रयोजन से विभिन्न सरकारी मंत्रालय/विभाग तथा

नागरिक समाज के साझेदार एक–दूसरे के साथ जुड़ गए हैं। आरआरई एक ऐसे परिवेश का निर्माण करने में मदद करेगी, जिसमें प्रत्येक जरूरतमंद व्यक्ति को बिना किसी पूर्वग्रह के स्वास्थ्य सेवाएं सुलभ हो सकेंगी। यह एक विशाल कार्य है जिसके लिए हर पड़ाव–स्टेशन के लिए नियोजित व्यापक कार्यकलापों की अवधारणा तैयार करने और उन्हें कार्यन्वित करने हेतु अनेक एजेंसियों की अनुमति और सहायता की जरूरत होगी। इस पहल का प्रमुख बल इस बात पर रहता है कि प्रत्येक आयु वर्ग तथा लक्षित आबादी के लिए चाहे वह उच्च जोखिम समूह हो अथवा आम आबादी, कुछ न कुछ होना चाहिए।

भारत एनएसीपी के तीसरे चरण, जिसका उद्देश्य 2012 तक एचआईवी महामारी को रोकना और उसकी गति को पलटना है, के मध्य में है। पिछले कुछ वर्षों में परामर्श और परीक्षण, एआरटी तथा एसटीआई के उपचार के लिए सेवाओं का काफी विस्तार हुआ है।

तथापि इन सेवाओं की मांग में वृद्धि को एक ऐसे परिवेश में बढ़ावा दिया जा सकता है जोकि ऐसे मुद्दों पर जिन्हें समाज वर्जित मानता है मुक्त

आरआरई का उद्देश्य देश के चारों तरफ कस्बों और गांवों में रहने वाले लोगों तक एचआईवी निवारण, उपचार, देखभाल और सहयोग के संदेश ले जाकर एचआईवी/एड्स के मुद्दे को जिस चुप्पी ने घेर रखा है उसे तोड़ना है

चर्चा की अनुमति देता हो। आरआरई इसी दिशा में एक प्रयास है। आरआरई का उद्देश्य देश के चारों तरफ कस्बों और गांवों में रहने वाले लोगों तक एचआईवी निवारण, उपचार, देखभाल और सहयोग के संदेश ले जाकर एचआईवी/एड्स के मुद्दे को जिस चुप्पी ने घेर रखा है उसे तोड़ना है। इसका उद्देश्य एक ऐसा परिवेश तैयार करना है जो एचआईवी के साथ जी रहे लोगों (पीएलएचआईवी) के प्रति लांछन तथा भेदभाव से मुक्त हो जिससे कि वे किसी भी डर तथा पूर्वाग्रह के बिना सेवाएं प्राप्त कर सकें।

आरआरई एचआईवी/एड्स पर विश्व का सबसे अधिक विशाल लामबंदी कार्यक्रम है जो उन महिलाओं और युवकों पर ध्यान केन्द्रित करता है जो एचआईवी से अधिक असुरक्षित हैं।

रेलगाड़ी का रूपरंग और अहसास

इस रेलगाड़ी को, इसके पिछले सफर के दौरान जो समग्र फीडबैक प्राप्त हुआ था उसे ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। 8 कोचों वाली इस रेलगाड़ी में चार प्रदर्शनी कोच हैं। तीन कोचों में एचआईवी/एड्स पर प्रदर्शन तथा अन्योन्यक्रियापूर्ण (इंटरेक्टिव) माडल हैं और एक कोच एनआरएचएम मुद्दों के प्रति समर्पित है। पंचायती राज संस्थानों, स्वयंसेवी समूहों (एसएचजी), आंगनवाड़ी कार्मिकों, अध्यापकों, युवा समूहों, पुलिस तथा सशस्त्र सेना कार्मिकों आदि जैसे विभिन्न हितधारकों से लिए गए जिला संसाधन व्यक्तियों के प्रशिक्षण के लिए एक प्रशिक्षण कोच है। एक सत्र में साठ संसाधन व्यक्तियों को प्रशिक्षित किया जा सकता है। हर दिन 3–4 सत्रों का आयोजन किया जा रहा है। इसका लक्ष्य एचआईवी/एड्स को प्रत्युत्तर देने की जिलों की क्षमता का सुदृढ़ीकरण करना है। छठी कोच में सामान्य बीमारियों से संबंधित परामर्श और उपचार की व्यवस्था है और बाकी कोच सेवाओं के लिए हैं।

इस बात को ध्यान में रखा गया है कि अधिकतर लाभग्राही अर्ध–साक्षर होंगे। इसलिए लोगों को जुटाने, उन्हें कार्यक्रमों में संलग्न करने और यह सुनिश्चित करने

रेड रिबन एक्सप्रैसः आठ डिब्बों वाली स्वास्थ्य ट्रेन

एचआईवी/एड्स पर प्रदर्शनीः 3 कोच

एनआरएचएम पर प्रदर्शनीः 1 कोच

संसाधन व्यक्तियों का प्रशिक्षणः 1 कोच

एचआईवी पर परामर्श और सामान्य स्वास्थ्य जांच सेवाएंः 1 कोच

रेड रिबन एक्सप्रैस के माध्यम से आपके गांवों में एचआईवी/एड्स, स्वाइन फ्लू तथा अन्य संक्रामक रोगों की बाबत महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की जा रही है। मेरा आपसे विनम्र निवेदन है इन मुद्दों से संबंधित जानकारी का अपने हमजोलियों के बीच प्रसार करें। ऐसा करके हम स्वास्थ्य संबंधी जानकारी और ज्ञान के प्रसार में एक बड़ा योगदान दे सकते हैं।

डॉ. मनमोहन सिंह
भारत के माननीय प्रधानमंत्री

रेड रिबन एक्सप्रैस देश के प्रत्येक कोने में एचआईवी निवारण संबंधी संदेश ले जाने का एक अत्यंत अनूठा प्रयास है। आइए एचआईवी के प्रसार को रोकने तथा एचआईवी के साथ जी रहे लोग जिस लांछन और भेदभाव का सामना कर रहे हैं उसके विरुद्ध लड़ने के लिए हम मिलकर काम करें।
आइए हम यह सुनिश्चित करें कि हमारे शहर, कस्बे और गांव संक्रमण से मुक्त रहें। आइए हम भारत को स्वस्थ और गुंजायमान बनाएं।

श्रीमती सोनिया गांधी
माननीय अध्यक्ष यूपीए तथा अध्यक्ष
राजीव गांधी प्रतिष्ठान

एचआईवी/एड्स के बारे में जानना, संक्रमण से मुक्त रहना और एचआईवी के साथ जी रहे लोगों को लांछित न करना हर व्यक्ति की जिम्मेदारी है। ऐसा करने से वे आगे आ सकेंगे, स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त कर सकेंगे और भारत को एक स्वस्थ और जागरूक समाज बना सकेंगे।

श्री गुलाम नबी आजाद
माननीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री

'आरआरई, एचआईवी/एड्स की महामारी के विरुद्ध लड़ने की राष्ट्र की सामूहिक शक्ति और संकल्प का प्रतीक है। प्रत्येक पड़ाव बिंदु पर स्थानीय नेताओं को शामिल किया गया है ताकि लोगों को प्रेरित किया जा सके। पंचायती राज संस्थाओं के सदस्यों, महिला स्वयंसेवी संगठनों, युवा समूहों, एनजीओ तथा अन्य हितधारकों के सदस्यों को उन जिलों में जहां से होकर रेलगाड़ी गुजरेगी, प्रशिक्षित किया जाएगा। उद्देश्य यह है कि एचआईवी निवारण के लिए स्थानीय क्षमता निर्मित की जा सके।

श्री दिनेश त्रिवेदी
माननीय केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार
कल्याण राज्य मंत्री

के लिए कि संदेशों को आत्मसात किया गया है, स्थानीय और दृश्य सामग्री और छवियों, लोक कलाओं और अन्य प्रस्तुतियों का उपयोग किया गया।

विभिन्न आईईसी/बीसीसी/आईपीसी कार्यकलापों के माध्यम से प्रशिक्षित स्वयंसेवी कार्यकर्ता एचआईवी संक्रमण, उसकी रोकथाम, उपचार, देखरेख और सहायता के सभी पहलुओं और साथ ही अन्य महत्वपूर्ण स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों को परिधि में ले रहे हैं।

दृढ़ राजनैतिक प्रतिबद्धता

उच्चतम स्तर पर राजनैतिक प्रतिबद्धता इस पहल का मूलाधार है। केन्द्र और राज्य सरकारों के बीच आरआरई जैसे सशक्त माध्यम को लेकर भरोसा है। पिछली बार इसने एक वर्ष के भीतर एचआईवी जैसे संवेदनशील विषय पर अत्यधिक स्पष्टता, सद्भावना और जागरूकता का सृजन किया था।

आरआरई को रवाना करने के मौके पर बोलते समय श्रीमती सोनिया गांधी ने कहा था कि ''रेड रिबन एक्सप्रैस चरण–I के संबंध में लोगों से जो भारी सराहना प्राप्त हुई थी उसने स्पष्टतः यह निर्दिष्ट किया था कि हम सही रास्ते पर हैं। एचआईवी की महामारी यूपीए सरकार के लिए एक उच्च प्राथमिकता है क्योंकि यह रोग अधिकतर गरीबों और युवाओं को प्रभावित करता है। एक और सराहनीय बात यह है कि इस चुनौती का सामना करने के लिए आरआरई राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न विभागों को तथा जिला स्तर पर निर्वाचित प्रतिनिधियों से लेकर स्वयंसेवी समूहों तक के विभिन्न हितधारकों को इकट्ठा करने में सफल रही है।''

माननीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री श्री गुलाम नबी आजाद ने कहा कि '2002–07 के दौरान हम इस रोग से प्रभावित लोगों की संख्या में भारी कमी लाने में सफल रहे थे और मेरा विश्वास है कि जब लोगों तक और अधिक जानकारी पहुंचेगी तो इन लोगों की संख्या में निश्चित गिरावट आएगी। इस प्रक्रिया में आरआरई एक सशक्त साधन हो सकती है।'

इस तथ्य को स्वीकार करते हुए कि एचआईवी/एड्स से संक्रमित और प्रभावित लोगों को अभी भी लांछन और भेदभाव का सामना करना पड़ता है, माननीय रेल मंत्री ममता बैनर्जी ने कहा कि हमारा युद्ध स्वयं रोग के विरुद्ध नहीं बल्कि एचआईवी/एड्स से प्रभावित लोगों को, जो भावनात्मक सहयोग मिलना चाहिए उसकी कमी के विरुद्ध है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि आरआरई का दूसरा दौर एचआईवी संबंधी भ्रांतियों का निराकरण करेगा और इस संक्रमण के शिकार हुए लोगों को लेकर एक अधिक सहानुभूति, समझ तथा स्वीकृति का मार्ग प्रशस्त करेगा। कवरेज के संबंध में दैनिक रिपोर्टें तैयार करके इस समूचे अभियान को मानीटर किया जा रहा है। इसके कार्यान्वयन के लिए एक बाहरी एजेंसी की सेवाएं ली गई हैं।

आरआरई का मिशन अज्ञान को जागरूकता में और निष्क्रियता को कार्रवाई में बदलकर इस महामारी के प्रसार की गति को पलटना और रोकना है।

■ श्री मयंक अग्रवाल
संयुक्त निदेशक (आईईसी)
नाको
mayanknaco@gmail.com

रेड रिबन एक्सप्रैस ने पूरी की अपनी रेगिस्तानी सफारी

आरआरई राजस्थान के 7 जिलों में 16 दिनों तक रुकी जिस दौरान
लगभग 45,000 आगंतुकों ने इसमें दिलचस्पी दर्शाई तथा विभिन्न क्रियाकलापों में भाग लिया

श्रीमती सोनिया गांधी द्वारा 1 दिसंबर को दिल्ली से रवाना किए जाने के बाद राजस्थान ऐसा पहला राज्य था जहां जाकर आरआरई रुकी थी। 2 दिसंबर को यह हनुमानगढ़ जिले में पहुंच गई थी जहां इसका जोरदार स्वागत हुआ। राज्य में रेलगाड़ी के पड़ावों में बीकानेर, जयपुर, अजमेर, बाड़मेर, उदयपुर (मवाली) तथा चित्तौड़गढ़ (चंदेरी) शामिल थे। प्रदर्शनी कोचों में अत्यधिक रुचि ली गई।

प्रत्येक पड़ाव स्टेशन पर स्थानीय समुदायों ने जोरशोर से हिस्सा लिया तथा एचआईवी/एड्स, एचआईएनआई जैसे विषय पर तथा दहेज मृत्यु, बालिका शिक्षा, छोटा परिवार, विवाहित जीवन साथी के प्रति निष्ठावान रहने जैसे मुद्दों पर अपनी स्थानीय भाषा में उसी समय बनाये गये गीत गाए।

■ बिलाल नकाती
तकनीकी अधिकारी
(आईईसी तथा मेनस्ट्रीमिंग)
नाको
bnaqati@gmail.com

रेड रिबन एक्सप्रैस

दिसंबर 2009 के दौरान राजस्थान और गुजरात में किया गया कार्य

क्र. सं.	विवरण	राजस्थान	गुजरात
1	आरआरई प्रदर्शनी देखने आये लोगों की संख्या	44899	107192
2	जिन लोगों तक पहुंच बनाई गई उनकी संख्या	83053	342186
3	प्रशिक्षित किये गये संसाधन व्यक्तियों की संख्या	3665	3810
4	उन आगंतुकों की संख्या जिन्हें परामर्श दिया गया	2409	2317
5	उन आगंतुकों की संख्या जिन्हें एसटीडी उपचार के लिए भेजा गया	421	229
6	उन आगंतुकों की संख्या जिनकी एचआईवी जांच की गई	1000	1453

गुजरात द्वारा रेड रिबन एक्सप्रैस का जोरदार स्वागत

20 दिसंबर, 2009 को आरआरई पालनपुर स्टेशन पर पहुंच गई जहां दो दिन के पड़ाव के दौरान हजारों रुचि रखने वाले श्रोता उपस्थित थे। महिलाओं, एसएचजी, आशा कार्मिकों तथा आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं ने एचआईवी तथा प्रजनन स्वास्थ्य संबंधी अपनी जानकारी को अद्यतन बनाने के लिए जानकारी और सेवाओं का लाभ उठाया – ये ऐसी जानकारियां थी जो वे समझती थी कि गांव के लोगों के साथ दैनिक संपर्क के दौरान उनके काम आ सकती थीं। इसके बाद यह रेलगाड़ी भावनगर, बोटाड़, बांकानेर और भक्तिनगर चली गई। अहमदाबाद में दो दिन का पड़ाव इसके यात्रा कार्यक्रम का अंतिम पड़ाव था।

आरआरई का स्वागत करने के लिए गुजरात में प्लेटफार्म पर पंक्ति में खड़े लोग

वर्दीधारी सेवाओं के व्यक्तियों – एनसीसी कैडेटों, सेना के जवानों तथा पुलिसकर्मियों ने आरआरई के प्रशिक्षण कार्यक्रमों और परीक्षण सुविधाओं का भली–भांति लाभ उठाया। छात्रों, स्वास्थ्यकार्मिकों, संपर्क कार्यकर्ताओं और अध्यापकों ने लोक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लिया और जैसे–जैसे वे और अधिक लोगों को आरआरई प्रदर्शनियों में लाए, उन्होंने पक्षपोषण का कार्य भी किया।

■ हेमंत शुक्ला
संयुक्त निदेशक (आईईसी)
गुजरात राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी,
अहमदाबाद
jdiecgsacs@gmail.com

रेड रिबन एक्सप्रैस

चरण-II की झांकियां

unicef

by S
Hon'ble Chairperson U
Safdarjung
Red Ribbon
Uniting India a
NACO
Rajiv Gandhi Fou
Flagging Off
Red Ribbon Express

ज़िन्दगी ज़िन्दाबाद!
RAJIV GANDHI FOUNDATION

रेड रिबन एक्सप्रैस के भीतर का एक दृश्य

विश्व एड्स दिवस पर राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटियों ने आयोजित किये प्रभावशाली कार्यक्रम

एचआईवी/एड्स से संक्रमित और प्रभावित लोगों के प्रति एकजुटता और संवेदना का प्रदर्शन करते हुए देश भर में रैलियों, मार्चों, एडवोकेसी कार्यशालाओं, युवा-आधारित कार्यक्रमों, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं और बैठकों का आयोजन किया गया। हर राज्य ने एक दिसंबर को विश्व एड्स दिवस मनाने के लिए महीनों से योजना बना रखी थी। उन्होंने राजनीतिक नेताओं, वरिष्ठ अधिकारियों, युवा संगठनों, सार्वजनिक और निजी क्षेत्र, गैर-सरकारी संगठनों, समुदाय-आधारित संगठनों और अनुदानकर्ता संस्थाओं को अनेक मंचों पर एकजुट किया। पीएलएचआईवी और एचआईवी पाजिटिव लोगों के नेटवर्कों की उपस्थिति से स्वस्थ संवाद और अनुभवों का आदान-प्रदान संभव हुआ। नीचे हम राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटियों द्वारा आयोजित कार्यकलापों और कार्यक्रमों की एक झांकी प्रस्तुत कर रहे है।

केरल ने दर्शाई एकजुटता

केरल राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी ने सभी जिलों में अनेक संगठनों को शामिल करते हुए अधिकाधिक एचआईवी पाजिटिव व्यक्तियों तक पहुंचने और उन्हें मुख्यधारा में शामिल करने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराते हुए राज्य भर में विश्व एड्स दिवस का भव्य आयोजन किया।

मुख्यमंत्री श्री वी. एस. अच्युतनानंदन ने लोगों से एचआईवी के विरुद्ध लड़ाई में एकजुट होने का आग्रह किया। स्वास्थ्य मंत्री श्रीमती पी. के. श्रीमती, स्वास्थ्य सचिव, श्री मनोज जोशी तथा मुख्य सचिव श्रीमती नीता गंगाधरन भी इस मौके पर उपस्थित थे।

तिरुवनंतपुरम–स्थित सीनेट हाल में विश्व एड्स दिवस के कार्यक्रम के आयोजन के अवसर पर अपने उद्घाटन भाषण में स्वास्थ्य मंत्री ने पाजिटिव लोगों तक पहुंचने और महामारी के प्रसार में कमी लाने के उद्देश्य से उच्च जोखिम वाले समूहों के बीच हस्तक्षेप कार्यकलाप बढ़ाए जाने की जरूरत पर बल दिया।

इस मौके पर आंगनवाड़ी कार्यकताओं के लिए एचआईवी निवारण प्रशिक्षण पर एक पुस्तिका का विमोचन भी किया गया। जादूगर गोपीनाथ मुथुकड ने एचआईवी निवारण पर एक संदेश ले जाने वाला कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

केरल राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी ने पूरे सप्ताह राज्य में स्वैच्छिक रक्तदान को बढ़ावा देने के लिए एक गहन अभियान का आयोजन किया। विश्व एड्स दिवस के मौके पर रक्त सुरक्षा प्रभाग ने राज्य में 28 स्वैच्छिक रक्तदान शिविरों का आयोजन किया।

विश्व एड्स दिवस 2009 के मौके पर संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री श्री वी. एस. अच्युतानंदन

प्रत्यसा नामक एक ड्राप–इन–सेंटर द्वारा अस्पतालों, रेलवे स्टेशनों तथा बस अड्डों पर कियोस्क स्थापित किए गए थे। लोगों के बीच आईईसी सामग्री और रेड रिबन बांटे गए। सकारात्मक रूप से चर्चा करने के सत्रों का भी आयोजन किया गया था। जिला चिकित्सा कार्यालयों, कालेजों और एनजीओ के सहयोग से थ्रिसूर, पलक्कड़, कन्नूर, मलापुरम तथा कसारगोड़ में रैलियों का आयोजन किया गया।

ज्योति केन्द्र नामक एकीकृत सलाह और जांच केन्द्र (आईसीटीसी) द्वारा एचआईवी परीक्षण को बढ़ावा देने के लिए एक नारा प्रतियोगिता आयोजित की गई। पुलारी केन्द्र नामक एक एसटीआई क्लीनिक ने एक जागरूकता कक्षा का आयोजन किया जिसमें एसटीआई का यथाशीघ्र उपचार किए जाने की जरूरत पर तथा एसटीआई और एचआईवी के बीच संबंध पर बल दिया गया।

राज्य में स्थित एआरटी यूनिटों ने एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के साथ–साथ 'सार्वभौमिक सुलभता तथा मानव अधिकारों' के मुद्दे पर एक पूर्ण चर्चा का आयोजन किया गया।

इनमें आईसीडीएस पर्यवेक्षकों के लिए एचआईवी/एड्स पर सत्र, आंगनवाड़ियों की माता – बैठकों में एचआईवी/एड्स पर दिशा–अनुकूलन तथा समाज कल्याण संस्थानों में आयोजित अनेक कार्यक्रम शामिल थे।

■ एस. अजय कुमार
संयुक्त निदेशक (आईईसी)
केरल राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी
jdiec.ksacs@gmail.com

भुवनेश्वर में एक नया एआरटी केन्द्र

उड़ीसा में विश्व एड्स दिवस, 2009 की ओर आगे बढ़ते हुए अनेक क्रियाकलाप आयोजित किए गए जिनमें पीएलएचआईवी के सम्मान और आदर के साथ जीने के अधिकार की ओर सभी वर्गों के लोगों का ध्यान आकृष्ट करने पर बल दिया गया था। इंडियन रेडक्रास सोसाइटी, उड़ीसा राज्य शाखा (आईआरसीएस–ओएसबी), भुवनेश्वर के सहयोग से युवाओं के लिए राज्य स्तरीय चित्रकला और निबंध प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। पीएलएचआईवी के बीच एक पोस्टर प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

कन्सर्न वर्ल्डवाइड इंडिया एंड आईएनपी+ के सहयोग से पीएलएचआईवी के लिए 29 और 30 नवंबर को सीवाईएसडी, भुवनेश्वर में एक राज्य स्तरीय सम्मेलन तथा प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया था। इस कार्यक्रम में 156 पीएलएचआईवी शामिल थे जिन्होंने चित्रकला, वाद–विवाद प्रतियोगिता, आदि में भाग लिया।

उड़ीसा राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी ने राज्य रक्ताधान परिषद (एसबीटीसी) के सहयोग से गीतम कालेज आफ इंजीनियरिग एंड टेक्नोलाजी, भुवनेश्वर में एक विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया। शिविर में कुल मिलाकर 502 यूनिट रक्त इकट्ठा किया गया।

उड़ीसा राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी द्वारा आयोजित क्रियाकलापों में महिला यौनकर्मियों (एफएसडब्ल्यू) को भी शामिल किया गया। एफएसडब्ल्यू के बीच लेपरा सोसाइटी के सहयोग से मलिसाही, भुवनेश्वर में एक 'कैंडल लाइट शो' का आयोजन भी किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 200 एफएसडब्ल्यू ने भाग लिया था जिसने आशा का महत्व प्रतिपादित किया, जो आशावाद का प्रतीक था।

युवकों को लामबंद किया गया तथा एक्शन एड इंडिया, उड़ीसा राज्य कार्यालय के सहयोग से एकामरा हाट, यूनिट–III, भुवनेश्वर में 29 नवंबर को एक संगीत कार्यक्रम आयोजित किया गया। 500 से अधिक युवकों ने इस कार्यक्रम का आनंद उठाया।

एचआईवी/एड्स पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए 'प्रिंस' समूह

एड्स जागरूकता के विषय पर 1 दिसंबर को एक विशाल रैली का आयोजन किया गया। इस रैली को उड़ीसा सरकार के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री द्वारा रवाना किया गया।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री ने कैपिटल अस्पताल, भुवनेश्वर में एक एआरटी केन्द्र का उद्घाटन किया। इसके अलावा रुधिर तथा रुधिर घटकों के समुचित प्रयोग की बाबत माननीय महिला और बाल विकास मंत्री श्रीमती प्रमिला मलिक ने एक रक्त घटक पृथक्करण यूनिट (बीसीएसयू) का उद्घाटन भी किया।

उड़ीसा राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी ने आईईसी सामग्री पर एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया। एक आटोरिक्शा ने, जिस पर एचआईवी/एड्स संबंधी संदेश प्रदर्शित किए गए थे, भुवनेश्वर शहर की मलिन बस्तियों का दौरा किया। इस सचल झांकी के माध्यम से अति असुरक्षित समूहों (एचआरजी) के बीच आईईसी सामग्री और कंडोम भी बांटे गए।

आइडिया सेलुलर लिमिटेड के सहयोग से सभी 400 रेड रिबन क्लबों (आरआरसी) तथा कालेजों में विश्व एड्स दिवस संदेश प्रदर्शित किए गए थे।

विश्व एड्स दिवस के मौके पर नई पहलों में उड़िया भाषा में 'वारासा' नामक एक स्मारिका का विमोचन शामिल था। वारासा लेखों, कविताओं और लघु कथाओं का एक संग्रह है। एक राज्य स्तरीय समारोह में एचआईवी/एड्स पर एक विषय–धुन का भी विमोचन किया गया। यह गीत यूएनडीपी के सहयोग से प्रसारित किया गया था। विश्व एड्स दिवस संध्या को 4 लाख आइडिया सेलुलर उपभोक्ताओं को एसएमएस भेजे गए थे।

एक राज्य स्तरीय बैठक के समापन समारोह के मौके पर 'प्रिंस' नामक विख्यात पुरस्कार–विजेता नृत्य मंडली ने एचआईवी/एड्स पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। एचआरजी तथा पीएलएचवी के बीच एचआईवी/एड्स पर आयोजित एक प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम 2, 9, 16 और 23 दिसंबर को दूरदर्शन पर प्रसारित किया गया। एक अन्य पहल के तहत कंप्यूटरीकृत बस टिकटों पर एचआईवी/एड्स संबंधी संदेश प्रकाशित किए गए थे। यह पहल उड़ीसा राज्य सड़क परिवहन निगम, भुवनेश्वर के सहयोग से कार्यान्वित की गई थी। माननीय वाणिज्य और

परिहवन मंत्री श्री संजीव कुमार साहू ने 18 दिसंबर को भुवनेश्वर के बारामुंडा बस अड्डे में इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

महिला कंडोमों के सामाजिक विपणन के लिए छः आईईसी वैनें संचालित की गईं और उड़ीसा राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी के सहयोग से ओटीवी द्वारा एक लघु मैराथन का आयोजन किया गया। लगभग 1200 सहभागियों ने इस मैराथन में भाग लिया।

कलेक्टर की अध्यक्षता में विशाल रैलियों, जिला स्तरीय बैठकों का आयोजन किया गया, संबंधित जिले के सीडीएमओ तथा जिला एचआईवी/एड्स निवारण और नियंत्रण यूनिट (डीएपीसीयू) के माध्यम से स्थानीय लक्षित हस्तक्षेप (टीआई) भागीदारों, युवा क्लबों, आरआरसी/कालेजों, नेहरू युवा केन्द्र संगठनों (एनवाईकेएस) तथा राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) स्वयंसेवकों के सहयोग से रक्तदान शिविरों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

महीने भर तक चले मीडिया अभियान के दौरान टेलीविजन चैनलों और रेडियो स्टेशनों ने एचआईवी/एड्स संबंधी कार्यक्रमों के प्रसारण पर ध्यान केन्द्रित किया।

■ डॉ त्रिपति मिश्रा
संयुक्त निदेशक (आईईसी)
उड़ीसा, राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी
osacsiec@gmail.com

बिहार में पीएलएचआईवी के लिए राजनैतिक प्रतिबद्धता

रैलियां, समारोह, खेलकूद कार्यक्रम, संगोष्ठियां तथा एचआईवी/एड्स के लिए निःशुल्क परीक्षण–ये कुछ ऐसे कार्यक्रम थे जोकि विश्व एड्स दिवस मनाने के दौरान बिहार की राजधानी पटना शहर में आयोजित किए गए थे।

एक रैली में पटना विमेंस कालेज के एनएसएस स्वयंसेवकों ने श्री कृष्ण मेमोरियल हाल में पहुंचने से पूर्व रेड रिबन लगाए और एचआईवी निवारण संबंधी नारों से युक्त प्लेकार्ड लिए हुए बेली रोड और फ्रेजर रोड पर 4 किलोमीटर पैदल यात्रा की। श्री कृष्ण मेमोरियल हाल में बिहार सरकार के स्वास्थ्य मंत्री श्री नंदकिशोर यादव ने उन्हें संबोधित किया। यह कार्यक्रम बिहार राज्य एड्स नियंत्रण समिति द्वारा यूनिसेफ और नागरिक सोसाइटी आर्गेनाइजेशन (सीएसओ) के सहयोग से आयोजित किया गया था।

श्री यादव ने एचआईवी पाजिटिव लोगों के साथ जुड़े लांछन को लेकर चिंता व्यक्त की जोकि एचआईवी के प्रसार को रोकने की दिशा में सरकार के प्रयासों के लिए एक बड़ी बाधा बनी हुई है। उनके अनुसार सामाजिक अभिवृत्तियां बहुत धीमे बदल रही हैं और उनकी गति एचआईवी की वैज्ञानिक समझ तथा इसके उपचार, जिसने पिछले दो दशकों के दौरान बड़ी तेजी से प्रगति की है, के अनुरूप नहीं चल पा रही है। उन्होंने उस पीड़ा का विशेष उल्लेख किया जोकि पीएलएचआई के साथ वैचारिक आदान–प्रदान के दौरान अभी भी साफ दिखाई देती है।

राज्य स्वास्थ्य मंत्री ने वहां उपस्थित लोगों को पुनः आश्वस्त किया कि बिहार सरकार पहले से ही राज्य के आम आबादी के बीच एचआईवी के प्रसार को रोकने की दिशा में अनेक उपाय कर रही है जिनमें राज्य के प्रत्येक जिले में ब्लड बैंक स्थापित करना शामिल है।

उनके अनुसार बल इस बात पर होना चाहिए कि पीएलएचआईवी के दिमागों में से भय को निकाल दिया जाए जिससे कि वे खुलकर सामने आ सकें और अपनी बात कह सकें।

बिहार राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी के स्वयंसेवकों ने दिन की शुरूआत संजय गांधी बायोलाजिकल पार्क में सवेरे की सैर पर आए लोगों पर रेड रिबन बांधने के साथ की।

भारतीय नृत्यकला मंदिर में एक समारोह को संबोधित करते हुए बिहार के राज्यपाल श्री देबानंद कंवर ने लोगों को, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को एचआईवी/एड्स के बारे में जानकारी प्रदान किए जाने की जरूरत पर बल दिया। उन्होंने सभी स्तरों पर एचआईवी/एड्स के विरुद्ध एक अभियान चलाने पर बल दिया।

स्वास्थ्य विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों तथा एनजीओ और बिहार राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी के प्रतिनिधियों ने बिहार के मुख्यमंत्री श्री नितीश कुमार पर भी रेड रिबन बांधा। श्री रवि परमार, प्रधान सचिव, स्वास्थ्य और परियोजना निदेशक, बिहार बिहार राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी ने इस मौके पर सहभागियों को संबोधित किया।

पटना नगर निगम (पीएमसी) के आयुक्त श्री के. संथल कुमार ने वहां एकत्र श्रोताओं को यह विश्वास दिलाया कि एचआईवी और एड्स के संबंध में जागरूकता पैदा करने के लिए पीएमसी निःशुल्क होर्डिंग उपलब्ध कराएगा।

बिहार राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी और यूनिसेफ के सहयोग से अन्य सरकारी कार्मिकों, गैर–सरकारी संस्थाओं तथा शैक्षिक संस्थानों द्वारा एचआईवी/एड्स की जागरूकता को लेकर अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। राज्य के विभिन्न जिला मुख्यालयों में एचआईवी पाजिटिव लोगों तथा कालेज के छात्रों के बीच क्रिकेट मैचों का आयोजन किया गया। अन्य क्रियाकलापों में एचआईवी/एड्स के लिए निःशुल्क परीक्षण, पटना शहर में अनेक स्थानों पर परामर्श और कंडोमों का निःशुल्क वितरण शामिल था।

■ बिहार राज्य एड्स
नियंत्रण सोसाइटी
biharsacs@gmail.com

स्रोतः जानकारी यूनिसेफ वेबसाइट से ली गई है।

पश्चिम बंगाल का मूलमंत्र है — एकजुट प्रयास

विभिन्न माध्यमों और बहुविध हितधारकों के माध्यम से लोगों के साथ जुड़ना पश्चिम बंगाल में आयोजित विश्व एड्स दिवस कार्यक्रमों की प्रमुख उपलब्धि थी क्योंकि यहां अन्य माध्यमों के साथ–साथ रेडियो, फिल्मों, समाचार–पत्रों, सेलुलर सेवाओं, नुक्कड़ नाटकों और झांकियों का व्यापक रूप से प्रयोग किया गया था। पश्चिम बंगाल राज्य एड्स निवारण और नियंत्रण सोसाइटी सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों, सिविल सोसाइटी संगठनों (सीएसओ) एनजीओ तथा पाजिटिव व्यक्ति समूहों सहित सभी हितधारकों ने एचआईवी/एड्स के बारे में जागरूकता सृजन की दिशा में एकजुट प्रयास किए।

जिला और ब्लाक स्तरों पर आयोजित क्रियाकलापों में राज्य के विभिन्न ब्लाकों में विश्व एड्स दिवस के अवसर पर प्रमुख हितधारकों द्वारा आयोजित रैलियां शामिल थीं। इन रैलियों को अखबार और इलेक्ट्रानिक मीडिया द्वारा व्यापक रूप से कवर किया गया था। पंचायती राज संस्थाओं के सदस्य धार्मिक नेताओं, पुलिस कार्मिकों तथा समाज के प्रहरियों के लिए एचआईवी/एड्स दिवस से पहले और बाद में संवेदीकरण कार्यशालाएं आयोजित की गई थीं। इस पहलकदमी में पाजिटिव वक्ताओं को भी शामिल किया गया था।

बच्चों (सीएलएचआईवी सहित) तथा किशोरों के लिए चित्रकला और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। उपयुक्त स्थानों पर स्टाल लगाए गए थे जिनमें उपलब्ध सेवाओं के बारे में व्यक्तियों को सूचित करने वाले टीआई और पोस्टर उपलब्ध थे। राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी के क्रियाकलापों का समुचित रिपोर्टिंग और प्रलेखन

राज्य के 12 जिलों में जिनमें श्रेणी ए और बी के जिले तथा दो प्राथमिकता वाले जिले शामिल थे, 25 से 1 दिसंबर के दौरान सचल आईईसी अभियान आयोजित किया गया।

किया गया था। पीएलएचआईवी के 22 नेटवर्कों ने भी इसी प्रकार के क्रियाकलापों का आयोजन किया।

''समुदाय संपर्क'' की अवधारणा को सामने रखते हुए तथा एचआईवी/एड्स के मुद्दे को स्पष्टता से सामने रखते हुए दि टाइम्स आफ इंडिया, आनंद बाजार पत्रिका जैसे व्यापक रूप से पढ़े जाने वाले अनेक समाचार–पत्रों के साथ–साथ आजकल और गणशक्ति जैसे देशी भाषा के समाचार–पत्रों का प्रयोग किया गया जिनमें एचआईवी/एड्स संपादकीय, डे ब्रांडिंग, विज्ञापन, समुदाय संपर्क कार्यक्रम, कठिन प्रश्न और नये तथ्य शामिल थे। हावड़ा तथा सिआलदा स्टेशनों सहित प्रमुख रेलवे स्टेशनों पर आडियो स्पाटों का प्रसारण किया गया। इन स्पाटों के माध्यम से देखभाल और सहयोग, सेवाआपूर्ति, एचआईवी/एड्स के साथ रह रहे लोगों की अधिक भागीदारी (जीआईपीए) अवधारणा तथा एचआईवी/एड्स के निवारण को बढ़ावा देने वाली जानकारी प्रसारित की गई थी।

राज्य के 12 जिलों में जिनमें श्रेणी ए और बी के जिले तथा दो प्राथमिकता वाले जिले शामिल थे, 25 से 1 दिसंबर के दौरान सचल आईईसी अभियान आयोजित किया गया। इनमें बैनरों और संदेशों का निदर्शन करने वाले आईईसी वाहनों सहित ब्लाक स्तरीय रैलियां, फिल्म शो तथा ब्लाक विकास अधिकारियों की उपस्थिति में और उनके सक्रिय सहयोग से पीएलएचआईवी समूहों द्वारा आयोजित विशेष सहभागितापूर्ण संवेदीकरण सत्र शामिल थे।

एचआईवी/एड्स निवारण तथा नियंत्रण से संबंधित मुद्दों पर समूचे कोलकाता में भारतीय एयरटेल लिमिटेड द्वारा मोबाइल मैसेज जारी किए गए।

राज्य में एकीकृत सलाह और जांच (आईसीटी) पहलकदमियों सहित विश्व एड्स दिवस कार्यक्रम में सरकारी क्षेत्र की सक्रिय सहभागिता देखी गयी। धुलागारी और फरक्का में एचआईवी/एड्स से संबंधित जानकारी का प्रसार करने के लिए अंबुजा सीमेंट ने एक रैली का आयोजन किया, ट्रकों के अड्डों पर विश्व एड्स दिवस प्रचार स्टाल और बूथ लगाये गये। हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने अपने फैक्ट्री परिसर में एक संवेदीकरण और जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया। इंडियन नेशनल माइन वर्कर्स फेडरेशन, ईस्टर्न कोल फील्ड्स, हिंडालको, कोल इंडिया, बीएसएफ, नगर निगम के क्षेत्रीय स्वास्थ्य कार्यालयों, इंडियन चैंबर्स आफ कामर्स तथा थैलासेमिया और एड्स निवारण सोसाइटी ने भी अत्यधिक रुचि ली और विश्व एड्स दिवस के मौके पर आयोजित विभिन्न पहलकदमियों का आयोजन किया।

हिंदुस्तान लेटेक्स लिमिटेड (एचएलएल) ने पश्चिम बंगाल एड्स नियंत्रण सोसाइटी के समन्वय से एचआईवी/एड्स के बारे में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से 1 और 2 दिसंबर, 2009 को यातायात के महत्वपूर्ण स्थलों और महत्वपूर्ण जंक्शनों पर 12 स्टाल लगाये और संचालित किए। क्रियाकलापों में अंतर्वैयक्तिक परामर्श, आईईसी सामग्री का वितरण, श्रृव्य–दृश्य शो, कंडोम प्रिदर्शन और वितरण शामिल थे।

एचएलएल ने प्रत्येक सचल वैन के पूरे मार्ग पर 7 नाटकों और 7 स्पाटों का प्रदर्शन करने वाली तथा लीफलेट और टीशर्टों का वितरण करने वाली दो झाकियां संचालित कीं।

पीएलएचआईवी मैत्री संघ द्वारा प्रत्येक

जिले में दो स्टाल संचालित किए गए। इन स्टालों में वीडिया शो, कठपुतली के तमाशे, परामर्श, अन्योन्यक्रियापूर्ण सत्र, नुक्कड़ नाटक, जादू के कार्यक्रम और लीफलेटों का वितरण शामिल था।

अलीपुर सेंट्रल जेल में 1 दिसंबर को एक आईसीटीसी तथा जागरूकता सृजन कार्यशाला आयोजित की गई।

अनेक संगठनों ने स्वतंत्र रूप से क्रियाकलापों का आयोजन किया। कोलकाता फाउंडेशन (विश्व एड्स समारोह समिति) ने एक जागरूकता अभियान और रैली का आयोजन किया। बरमोहनपुर भगवती देवी विमेंस वेलफेयर सोसाइटी, खाखुर्दा, पश्चिम मिदनापुर ने विश्व एड्स दिवस के अवसर पर डिगा में एक जागरूकता और संवेदनशीलता कार्यक्रम का आयोजन किया। अन्य अनेक सीएसओ भी साथ मिल गए और विश्व एड्स दिवस को समुचित महत्व प्रदान करने के लिए कार्यक्रम आयोजित किए गए।

■ मोनिदीपा मुखर्जी
उप निदेशक (आईईसी)
पश्चिम बंगाल एसएपी एंड सीएस

गुजरात ने लांछन समाप्त करने की कसम उठाई

1 दिसंबर को वड़ोदरा में एक युवा सम्मेलन आयोजित किया गया। पूरा दिन चलने वाले इस समारोह में ग्रामीण और उच्च व्याप्ति वाले क्षेत्रों के 15–30 वर्ष के आयु वर्ग के 40,000 से अधिक युवकों ने भाग लिया। स्वास्थ्य मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री परबत भाई पटेल ने सफेद और लाल रंग के सैकड़ों गुब्बारे आकाश में उड़ा एचआईवी/एड्स से संक्रमित और प्रभावित लोगों के जीवन में शांति और सद्भावना का एक मजबूत संदेश प्रसारित किया। शहर के लोगों तथा श्रोताओं में से 1000 से अधिक व्यक्तियों ने एक प्रतिज्ञा पर हस्ताक्षर किए जिसके अधीन पीएलएचआईवी के लिए और अधिक न्यायपूर्ण तथा न्यायोचित जिंदगी सुनिश्चित करने के प्रति प्रतिबद्धता व्यक्त की गई थी।

उन्होंने एचआईवी पाजिटिव महिलाओं और युवकों, जोकि अपने भोजन, आहार और व्यायाम व्यवस्था की अनदेखी कर देते हैं, की पोषणिक जरूरतों की ओर भी ध्यान आकृष्ट किया। उनके अनुसार विशेष रूप से एचआईवी से संक्रमित लोगों के बीच स्वस्थ संबंधों और जीवनशैली के महत्व पर बल देते हुए एक जागरूकता आंदोलन शुरू किया जाना चाहिए। दो हमजोली शिक्षकों द्वारा जिन्होंने क्षेत्र से अपने अनुभवों के बारे में बातचीत की, जानकारी का आदान–प्रदान किया गया। प्रहसनों, वृत्त नाटकों तथा संगीत की प्रस्तुति द्वारा इस कार्य में सहायता की गई।

जिला स्तर पर सांसदों, विधायकों, जिला पंचायत के अध्यक्ष, जिला कलेक्टरों और डीडीओ ने ऐसी प्रतियोगिताओं, लेक्चरों, निदर्शनों तथा अन्य मेलजोलपूर्ण कार्यक्रमों का आयोजन किया, उन्हें प्रोत्साहन दिया और उनमें भाग लिया जिनका उद्देश्य एचआईवी संक्रमण, निवारण, उपचार, देखभाल तथा सहयोग के सभी पक्षों की बाबत जागरूकता बढ़ाना था।

■ हेमंत शुक्ला
संयुक्त निदेशक (आईईसी),
गुजरात राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी,
अहमदाबाद
jdiecgsacs@gmail.com

एचआईवी/एड्स के मुद्दों की जानकारी देते हुए स्वास्थ्य मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री परबतभाई पटेल

एड्स के विरुद्ध चंडीगढ़ में भ्रमण कार्यक्रम

जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े लगभग 1100 व्यक्ति एड्स के विरुद्ध आयोजित एक "सैर–कार्यक्रम" में एकजुट हुए ताकि कि समुदाय को प्रेरित किया जा सके तथा सामाजिक बदलाव लाने के लिए एचआईवी/एड्स संबंधी जागरूकता बढ़ाई जा सके।

चंडीगढ़ राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी द्वारा आयोजित इस सैर या भ्रमण ने एक रंगारंग जुलूस का रूप ले लिया जिसमें रेड रिबन क्लबों के छात्र, डाक्टर, नर्सें, एनजीओ, उच्च जोखिम वाले समूहों के लोग तथा पीएलएचआईवी शामिल थे। आम लोगों के बीच पर्चे बांटे गए तथा ''सार्वभौमिक सुलभता और मानव अधिकार'' विषय पर नारे लगाए गए। उनके साथ सुंदर शोभ यान शामिल थे जिनमें एचआईवी/एड्स के संचरण के माध्यमों की जानकारी दी गई थी और साथ ही एक जीवंत कठपुतली तमाशे के साथ कंडोम प्रोत्साहन वैन भी चल रही थी।

चंडीगढ़ प्रशासन के स्वास्थ्य सचिव श्री रामनिवास ने यह कहा कि क्योंकि एआरटी केन्द्र में उपचार प्राप्त कर रहे अधिकांश एड्स के साथ जी रहे लोग हरियाणा और पंजाब के निकटवर्ती राज्यों से आए हैं और इस तरह के संक्रमण के अनेक मामले, इंजेक्शन के माध्यम से नशीली दवाओं का प्रयोग करने वालों से जुड़े हैं इसलिए एड्स नियंत्रण क्रियाकलाप को नशीली दवा व्यसन निवारण क्रियाकलापों के साथ जोड़ा जाना चाहिए।

डॉ. एम. एस. बेंस, निदेशक, स्वास्थ्य सेवा, चंडीगढ़ प्रशासन ने एचआईवी/एड्स के बारे में जागरूकता क्रियाकलापों को जारी रखने पर बल दिया।

डॉ. विनीता गुप्ता, परियोजना निदेशक, चंडीगढ़ एड्स नियंत्रण सोसाइटी ने मौके पर उपस्थित भारी भीड़ के प्रति कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आभार व्यक्त करते हुए यह कहा कि विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े लोगों को जिनमें लक्षित मलिन बस्ती क्षेत्र, उच्च जोखिम वाले समूह, पीएलएचआईवी, छात्र और देखभाल प्रदाता शामिल हैं, परस्पर मिलते हुए और मुक्त रूप से विचारों का आदान–प्रदान करते हुए देखना उत्साहपूर्ण है। एचआईवी–पाजिटिव व्यक्तियों के चंडीगढ़ नेटवर्क के सदस्यों के बीच कंबल बांटे गए।

■ टीनू खन्ना
सहायक निदेशक (आईईसी), चंडीगढ़ राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी
chandigarhsacs@gmail.com

विश्व एड्स दिवस अभियान के दौरान गोवा में एक नुक्कड़ नाटक का दृश्य

गोवा राज्य एड्स नियंत्रण समिति द्वारा ई-बुलेटिन की शुरूआत

गोवा राज्य ने विश्व एड्स दिवस पर जागरूकता उत्पन्न करने के अपने प्रयास जारी रखे। एचआईवी/एड्स के संबंध में जानकारी का प्रसार करने और भ्रांतियों का निराकरण करने के लिए अन्य क्रियाकलापों के अलावा गोवा राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी प्रौद्योगिकी के साथ भी कदम से कदम मिला कर आगे बढ़ा और उसने विश्व एड्स दिवस के मौके पर ''एड्स को रोकें वायदा पूरा करें'' नामक पहला ई–बुलेटिन जारी करके अपने क्रियाकलापों का दायरा बढ़ाया। इस मौके पर रैलियों, आईईसी सामग्री के निदर्शन, नुक्कड़ नाटकों और ''एचआईवी/एड्स इन गोवाः सिचुएशन एंड रिस्पांस 2009'' नामक एक पुस्तिका का विमोचन किया गया।

दो रैलियां आयोजित की गईं — एक गोवा में और दूसरी आरमबोल में। डॉ. प्रदीप पड़वाल, परियोजना निदेशक, गोवा राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी ने गोवा में एचआईवी/एड्स की मौजूदा स्थिति के बारे में उपस्थित श्रोताओं को संक्षेप में बताते हुए अर्बन हेल्थ सेंटर, पणजी द्वारा आयोजित रैली को रवाना किया। डैंपो कालेज आफ कामर्स, एल्टिनो और गवर्नमेंट पालीटेक्निक कालेज, एल्टिनो ने इस रैली में भाग लिया। दूसरी रैली का आयोजन पेरनम स्थिति सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र द्वारा किया गया था। पंचकोशी हायर सेकेंडरी स्कूल, आरमबोल के छात्रों और स्थानीय व्यक्तियों सहित 200 सहभागियों ने इस रैली में भाग लिया।

गोवा राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी ने सचिवालय (सेमिनार हाल) पोरवोरिम में विश्व एड्स दिवस का आयोजन किया। आयोजन का विषय ''सार्वभौमिक सुलभता और मानव अधिकार'' था। स्वास्थ्य मंत्री श्री विश्वजीत राणे ने जोकि समारोह में मुख्य अतिथि थे एचआईवी/एड्स संबंधी जागरूकता वाले संदेशों से युक्त एक सचल होर्डिंग वाहन को रवाना किया। इसके बाद एचआईवी/एड्स को रोकने के लिए कंडोम को प्रोत्साहित करने के प्रयोजन से पीएसआई के स्टाफ द्वारा एक नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया गया।

अपने भाषण में स्वास्थ्य मंत्री ने छात्रों को आगे आने तथा एचआईवी/एड्स के निवारण के संबंध में जागरूकता उत्पन्न करने की चुनौती का सामना करने को कहा। स्वास्थ्य मंत्री द्वारा ''एचआईवी/एड्स इन गोवाः सिचुएशन एंड रिस्पांस 2009'' शीर्षक पुस्तिका का विमोचन किया गया। इस पुस्तिका में गोवा राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी द्वारा उपलब्ध कराई जा रही सेवाओं के अलावा एचआईवी/एड्स से संबंधित वास्तविक आंकड़े दिए गए हैं।

श्री एस. के. श्रीवास्तव, मुख्य सचिव, गोवा सरकार इस मौके पर माननीय अतिथि थे। डॉ. प्रमोद सलगांवकर, चेयरपरसन, गोवा राज्य महिला आयोग, डॉ. राजनंद देसाई, निदेशक, स्वास्थ्य सेवा और श्री राजीव वर्मा, स्वास्थ्य सचिव, गोवा सरकार भी इस कार्यक्रम के दौरान उपस्थित थे।

मुख्य सचिव ने गोवा राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी के ''एड्स को रोकें वायदा पूरा करें'' नामक पहले ई–बुलेटिन का विमोचन किया जोकि एचआईवी/एड्स के बारे में जागरूकता सृजन करने की दिशा में गोवा राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी के क्रियाकलापों और कार्यक्रमों की जानकारी देती है। गोवा राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी द्वारा एचआईवी/एड्स पर 26 नवंबर को आयोजित ''अखिल गोवा अंतः उच्च माध्यमिक स्कूल प्रश्नोत्तरी'' के विजेताओं को माननीय स्वास्थ्य मंत्री द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए।

साथ ही उन्होंने एड्स जागरूकता के संबंध में ''लघु फिल्म प्रतियोगिता'' के विजेताओं को भी पुरस्कार प्रदान किए। इस मौके पर विजेता लघु फिल्में भी दर्शाई गईं

■ दिनांतिका झा
सहायक निदेशक (पीडीएस),
गोवा राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी
goaaids@gmail.com

एनएसीपी-III की मध्यावधि समीक्षा

इस मध्यावधि समीक्षा में यह पाया गया कि आधारिक-तंत्र के विकास और सेवा आपूर्ति की दिशा में की गई प्रगति सही मार्ग पर है! इसके अंतर्गत लक्ष्यों की दिशा में प्रगति, कवरेज, सुलभता तथा हस्तक्षेपों की गुणवत्ता का मूल्यांकन भी किया गया।

राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन (नाको) तथा विकास साझेदारों (डीपी) ने राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम चरण–III (एनएसीपी–III) के कार्यान्वयन की 16 नवंबर और 3 दिसंबर, 2009 के बीच एक संयुक्त मध्यावधिक समीक्षा (एमटीआर) की। एनएसीपी–III के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े अध्ययनों की प्रस्तुतियों की एक श्रृंखला अक्तूबर, 2009 में किए गए एमटीआर से पूर्व आयोजित की गई थी। एमटीआर मिशन में शामिल विकास साझेदार थेः विश्व बैंक, यूएनएड्स, यूनिसेफ, यूएनएफपीए, यूएनओडीसी, यूएनडीपी, डब्ल्यूएचओ, डीएफआईडी, जीएफएटीएम, यूएसजी (यूएसएड, सीडीसी तथा पीईपीएफएआर) बिल और मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन, क्लिंटन फाउंडेशन तथा अन्य एजेंसियों के प्रतिनिधि।

एनएसीपी–III एमटीआर का मुख्य उद्देश्य एचआईवी/एड्स के प्रति समग्र राष्ट्रीय प्रतिक्रिया का मूल्यांकन करना था। इस समीक्षा का उद्देश्य यह पता लगाना था कि क्या कार्यान्वयन के पहले ढ़ाई वर्षों (अप्रैल, 2007 से सितंबर, 2009) में अर्जित अनुभव और जानकारी के प्रकाश में एनएसीपी–III के डिजाइन में किसी तरह के मध्यावधिक संशोधनों की जरूरत है।

एमटीआर के विशिष्ट उद्देश्य निम्नानुसार हैं:

1. टीआई, एसटीआई/एसटीडी सेवाओं, पीपीटीसीटी, सामाजिक समावेशन और साम्य, आईईसी के गहन विश्लेषण सहित लक्ष्य, कवरेज, सुलभता और हस्तक्षेपों के स्तर/गहनता के संबंध में की गई समग्र प्रगति का जायजा लेना।
2. एनएसीपी–III को कार्यान्वित करने के लिए महत्वपूर्ण क्रियाकलापों जैसे कि संस्थानगत प्रबंध प्रक्रियाओं, प्रभाविता और कार्यभार, तकनीकी जरूरत आकलन तथा सेवाओं की आपूर्ति में नवाचार जैसी महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं का जायजा लेना।
3. एनएसीपी–III के कार्यान्वयन में पेश आ रही चुनौतियों का अध्ययन करना और उनकी ओर ध्यान देने के लिए कार्रवाई की सिफारिश करना।
4. परियोजना विकास लक्ष्यों की दिशा में प्रगति की समीक्षा करना, मौजूदा लक्ष्यों की प्रासंगिकता का जायजा लेना और कार्यनीति में बदलाव के लिए संभावित क्षेत्र सुझाना।
5. एनएसीपी–III के लिए समग्र वित्तपोषण की पर्याप्तता की समीक्षा करना।
6. परियोजना के अधिप्राप्ति और वित्तीय प्रबंध की समीक्षा करना और सरकार द्वारा जैसे बदलाव जरूरी समझे जाएं उन पर सहमत होना।

एनएसीपी–III एमटीआर के प्रत्येक घटक के संबंध में प्रमुख निष्कर्ष और सिफारिशें संक्षेप में नीचे प्रस्तुत की गई हैं:

रोकथाम

- लक्षित हस्तक्षेपों (टीआईज) की संख्या एनएसीपी–II में 789 से महत्वपूर्ण रूप से बढ़ कर अब 1,247 हो गई है जो 11 लाख मुख्य उच्च जोखिमपूर्ण समूहों (एचआरजीज) के लोगों को परिधि में लेते हैं।
- संशोधित अनुमान जो कुल मिलाकर 6 लाख एचआरजी बैठते हैं सहित 17 राज्यों में मानचित्रण प्रक्रिया।
- कंडोम वितरण जो 2007 में 11 करोड़ 80 लाख था और जो 2008 में बढ़कर 21 करोड़ 10 लाख तथा सितंबर, 2009 तक 14 करोड़ 60 लाख तक पहुंच गया।
- एसटीआई सेवाएं जो 2007 में 2 लाख 50 हजार लोगों तक थीं वे 2008 में बढ़कर 11 लाख और सितंबर, 2009 तक 8 लाख तक पहुंच गई।
- टीआई तथा आईसीटीसी के बीच और इसके बाद एआरटी तक तालमेल का सुदृढ़ीकरण।
- जिन लोगों का 2007 में परीक्षण कराया गया उनकी संख्या 76 लाख थी जोकि 2008 में बढ़कर 91 लाख तक पहुंच गई। इस तरह की गर्भवती महिलाओं की संख्या जोकि 2006–07 में 20 लाख थी वह 2008–09 में बढ़कर 46 लाख तक पहुंच गई।
- टीबी रोगियों और पीएलएचआईवी के बीच क्रास–रेफरल में वृद्धि।
- स्वैच्छिक रक्तदान 54.4 प्रतिशत से बढ़कर 73.4 प्रतिशत तक पहुंच गया।
- सुस्पष्ट कार्यनीतिक बल, व्यवहारपरक बदलाव पर है।
- आरआरई जैसे अनेक विशाल अभियान शुरू किए गए।

सिफारिशें

- टीआई के लिए लक्ष्य नए मानचित्रण अनुमानों के आधार पर समायोजित किए जाने चाहिए।
- एचआरजी द्वारा आईसीटीसी जाने में बाधक तत्वों की पहचान की जाए और उनकी ओर ध्यान दिया जाए।
- रोग अनुमानों के संशोधित एसटीआई/आरटीआई के संक्रमण भार के आधार पर एनएसीपी–III एसटीआई उपचार के लक्ष्य की समीक्षा करें और उन्हें संशोधित करें।
- सभी एसटीआई स्थलों के लिए एसटीआई रंजित–कोडेड उपचार किटों की अधिप्राप्ति और वितरण में तेजी लाएं।
- सभी प्रभागों, विशेष रूप से टीआई के साथ मजबूत तालमेल सुनिश्चित करें।
- लांछन/भेदभाव को कम करने के प्रति लक्षित व्यापक अभियान कार्यान्वित करें।
- परिणामी लक्ष्यों तक पहुंचने के लिए समग्र आईईसी कार्यनीतियों की प्रगति का मूल्यांकन करें।

देखभाल, सहायता और उपचार

प्रमुख निष्कर्ष

- निःशुल्क एआरटी और देखभाल तथा सहयोग की बेहतर सुलभता।
- सेवाओं के स्तर में सुधार लाने पर बल।
- आपूर्ति श्रृंखला प्रबंध पर बल।

अध्ययन का शीर्षक	प्रमुख निष्कर्ष
एचआईवी रोकथाम के लिए लक्षित हस्तक्षेपों के प्रभाव का मूल्यांकन	• एचआईवी महामारी नियंत्रित रही है और उसमें गिरावट आ रही है। • टीआई तथा आईईसी के फलस्वरूप यौनकार्य में कंडोम प्रयोग में सुधार।
एसटीडी/एसटीआई सेवाओं के कवरेज, प्रभाविता और गुणवत्ता का मूल्यांकन	• किए जा रहे सिफलिस परीक्षणों की संख्या बढ़ रही है विशेष रूप से इसलिए क्योंकि स्क्रीनिंग एसटीआई/एएनसी क्लीनिकों में की जाती है। • सिफलिस में निश्चित कमी।
पीपीटीसीटी सेवाओं की सुलभता और उपयोग का मूल्यांकन	पीपीटीसीटी सेवाओं में एनएसीपी–III के दौरान तेजी आई हालांकि इसका कवरेज और बढ़ाए जाने की जरूरत है। वर्ष 2008–09 में भारत में सभी गर्भवती महिलाओं में से 15.9 प्रतिशत का परीक्षण किया गया और 31 प्रतिशत अनुमानित एचआईवी पाजिटिव महिलाओं की पहचान की गई।
संपर्क एआरटी केन्द्रों (एलएसी) का मूल्यांकन	एआरटी सेवाओं की सुलभता के लिए कम यात्रा और प्रतीक्षा समय तथा कम नकद खर्चों सहित एलएसी के प्रति लाभग्राहियों का सकारात्मक बोध। एलएसी के कारण एआरवी औषधि अनुपालन के स्तर में (97 प्रतिशत) सुधार हुआ।
नाको और राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटियों की प्रभाविता, कार्यभार और लागत सहित संगठनात्मक क्षमता की समीक्षा	• क्षमता–आधारित सुस्पष्ट कार्य–विवरण। • रिक्तियां भरी जाएं। • डाटा विश्लेषण और प्रयोग की क्षमता बढ़ाई जाए। • ठेके पर कार्य करने वाले कर्मचारियों के लिए एचआर प्रक्रियाओं का सुदृढ़ीकरण करें। • वरिष्ठ अधिकारियों के लिए निर्णय लेने में स्पष्टता प्राप्त करें। • कर्मचारियों को क्षमता निर्माण में प्रशिक्षित करें।
एनएसीपी–III के विभिन्न घटकों की इकाई लागत की समीक्षा	एनएसीपी–III ने अधिकांश लक्ष्यों की पूर्ति कर ली और अपने क्रियाकलापों का पैमाना बढ़ा दिया। भविष्य में निवारण में और अधिक निवेश किए जाने की जरूरत है। औषधियों की लागत और टीआई के युक्तियुक्तकरण को ध्यान में रखते हुए एनएसीपी–III के लक्ष्य बचाव पर ध्यान देने के साथ पूर्तियोग्य हैं।
एनएसीपी–III के लिए दाता वित्तीय प्रतिबद्धताओं को अद्यतन बनाना और उनका विश्लेषण करना तथा एनएसीपी के लिए संसाधनों में कमी का पता लगाना	बजट बाह्य संसाधनों में कमी (38 प्रतिशत) आई है। उच्च जोखिमपूर्ण राज्यों में बल देते हुए निवारण के लिए लगभग 60 प्रतिशत बजट बाह्य संसाधन से हैं।
आईईसी कार्यनीति की गुणवत्ता का मूल्यांकन	आईईसी अभियानों ने ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में एचआईवी संबंधी ज्ञान में वृद्धि की है। स्वैच्छिक रक्तदान, कंडोम प्रयोग और स्वैच्छिक सलाह तथा जांच जैसी सेवाओं की उपयोगिता में वृद्धि का श्रेय अंशतः आईईसी के माध्यम से बढ़ी हुई जागरूकता को दिया जा सकता है।
आठ राज्यों में डाटा ट्राएंगुलेशन कार्य	जिलों का जो वर्गीकरण केवल सेन्टेनल सर्वेलेन्स डाटा पर आधारित है उसे संशोधित किए जाने की जरूरत है। कार्यक्रम डाटा, सर्वेक्षण और एचआरजी के मानचित्रण सहित डाटा के सभी संभव सेटों का प्रयोग करते हुए जिलों का पुनर्वर्गीकरण किया जाए।

सिफारिशें

- एआरटी के मानीटर तंत्र में एचआरजी का अभिज्ञान शामिल करें।
- सामुदायिक देखभाल केन्द्रों (सीसीसी) के मूल्यांकन के लिए आकलन।
- बाल एआरटी की सुलभता में लैंगिक अंतर के कारणों का पता लगाने के लिए प्रचालनात्मक अनुसंधान आयोजित करें।

संस्थानगत क्षमता विकास

प्रमुख निष्कर्ष

- नाको ने विभिन्न प्रभागों का सृजन और सुदृढ़ीकरण करके संगठनात्मक क्षमताओं और आकार का पैमाना बढ़ाया।
- प्रचालनात्मक मार्गनिर्देश निर्धारित करके संस्थानगत क्षमताओं का सुदृढ़ीकरण किया।

सिफारिशें

- मानव संसाधन प्रबंध को औपचारिक बनाएं।
- प्रमुख राज्यों में रिक्तियां भरें।

कार्यनीतिक प्रबंध और सूचना प्रणाली

प्रमुख निष्कर्ष

- नाको ने कंप्यूटरीकृत प्रबंध सूचना प्रणाली (सीएमआईएस) रिपोर्टिंग का पैमाना काफी बढ़ा दिया है।
- जिला और राज्य निरीक्षण तथा मूल्यांकन (एम तथा ई) संसाधनों के क्षमता निर्माण सहित सात राज्यों में डाटा ट्रायंगुलेशन पूरा कर लिया गया है।
- प्रचालनात्मक अनुसंधान में प्रमुख पहलकदमियां की गई हैं।

सिफारिशें

- डाटा संग्रहण, डाटा की गुणवत्ता में सुधार लाएं और विश्लेषणात्मक अंतरों पर ध्यान दें।
- सभी स्तरों पर एम तथा ई क्षमताओं का सुदृढ़ीकरण करें।
- कार्यक्रम अंतरालों की ओर ध्यान देने के लिए अनुसंधान और मूल्यांकन अध्ययनों का प्राथमिकता निर्धारण करें।

एमटीआर के अनुसार नाको द्वारा प्रमुख विकासात्मक भागीदारों के सहयोग से विशेष अध्ययन किए गए हैं। इन अध्ययनों के प्रमुख निष्कर्ष तालिका में प्रस्तुत किए गए हैं।

■ डॉ रुचि सोगरवाल
कार्यक्रम अधिकारी, मूल्यांकन और प्रचालनात्मक अनुसंधान
नाको
ruchi.dr@gmail.com

मल्टीमीडिया अभियान द्वारा नागालैंड, मिज़ोरम और मणिपुर में नशीली दवाओं-एचआईवी संबंध की जांच

रेड रिबन युवा आइकॉन 2009 एक ऐसा मल्टीमीडिया अभियान था जिसे युवकों और जोखिमपूर्ण आबादियों तक पहुंचने के लिए फुटबाल प्रतियोगिताओं और संगीत का प्रयोग करते हुए तीन पूर्वोत्तर राज्यों में सफलतापूर्वक चलाया गया

मिज़ोरम, नागालैंड और मणिपुर के पूर्वोत्तर राज्यों में नशीली दवाओं से होने वाले एचआईवी संक्रमण से जुड़े मुद्दों का प्रत्युत्तर देते हुए नाको ने कार्यक्रमों की एक श्रृंखला की शुरूआत की जिसमें व्यवहारपरक बदलाव, कंडोम प्रोत्साहन, रक्त सुरक्षा, एचआईवी परामर्श और परीक्षण के लिए प्रभावी संचार शामिल था। हाल ही में नाको द्वारा यूएनओडीसी तथा तीन राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटियों की सहभागिता से एक मल्टीमीडिया अभियान आयोजित किया गया जिसके दौरान नशीली दवाओं के प्रयोग, एचआईवी/एड्स से प्रभावित समुदायों को अभिप्रेरित करने के लिए संगीत और फुटबाल जैसे खेलों का प्रयोग किया गया।

15 दिसंबर, 2009 को आइजोल में रेड रिबन युवा आइकॉन 2009 नामक राज्यव्यापी संगीतात्मक प्रतिभा खोज प्रतियोगिता का शानदार फाइनल आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम टेलीविजन पर सीधे प्रसारित किया गया जिसका 300,000 से अधिक दर्शकों ने आनंद उठाया। ध्वनि परीक्षण में भाग लेने और अपने चहेते गायकों का उत्साह बढ़ाने के लिए सहभागी और श्रोता दूरदराज के जिलों से आए थे।

तीन राज्य एचआईवी से असुरक्षित क्यों हैं?

- उनकी सीमाएं बांग्लादेश और म्यांमार से जुड़ी हुई हैं
- म्यांमार के साथ निकटता के कारण हीरोइन आसानी से मिल जाती है
- पिछले एक दशक में नशीली दवाओं का सेवन करने वालों और एचआईवी के बीच संबंध का सुदृढ़ीकरण हुआ है
- नशीली दवाओं का सेवन – एचआईवी के स्त्री–पुरुष यौन संचरण का प्रमुख प्रेरक

व्यापक प्रभाव

यह अभियान 2 अक्तूबर, 2009 में शुरू हुआ था मार्च, 2010 में समाप्त हो जाएगा और इसे मिज़ोरम के 8, नागालैंड के 11 तथा मणिपुर के 9 जिलों में ले जाया जा रहा है। सांसदों, मंत्रियों, निर्णय लेने वाले वरिष्ठ अधिकारियों, पंथ–आधारित संगठनों और विभिन्न युवा निकायों ने इस अभियान का समर्थन किया है। नशीली दवाओं का सेवन करने वालों को पहचानने के लिए और उनके भीतर इस आशय का आत्मविश्वास पैदा करने कि वे अपनी जिंदगी का पुनर्निर्माण कर सकते हैं तथा एक ऐसी सहयोग प्रणाली का निर्माण करके जो उनके पुनर्वास में सहायक हो तथा उन्हें उनके परिवारों और मित्रों से पुनः जोड़ने में मदद कर सके, अनेक प्रयास किए जा रहे हैं।

फुटबाल प्रतियोगिताओं को देखने बहुत बड़ी संख्या में लोग आए जिन्होंने नशीली दवाओं का सेवन करने वालों और एचआईवी पाजिटिव लोगों को सहयोग देने का आश्वासन दिया। कई लोगों ने इन दोनों के बीच के संबंध को समझने और यह जानने की इच्छा व्यक्त की कि वे किस तरह एक ऐसी प्रेरक भूमिका निभा सकते हैं जिससे कि ऐसे पीएलएचवाई के लिए जिंदगी आसान और लांछन से मुक्त हो जाए जो इंजेक्शन के माध्यम से नशीली दवाएं लेने के कारण संक्रमित हुए थे और साथ ही इंजेक्शनों के सुरक्षित प्रयोग और सुरक्षित यौन व्यवहार के निमित्त आईडीयू के बीच जागरूकता का सृजन करें जिससे कि एचआईवी के संचरण को रोका जा सके।

रेड रिबन क्लबों ने मिज़ोरम में शानदार कार्यक्रम प्रस्तुत किए

हाल के साक्ष्य से यह पता चलता है कि मिज़ोरम में लगभग एक–तिहाई (31.8 प्रतिशत) एचआईवी संक्रमण इंजेक्शन के माध्यम से नशीली दवाओं का प्रयोग करने वालों (आईडीयू) के बीच हैं। इसके फलस्वरूप क्षति में कमी लाने और एचआईवी से संक्रमित नशीली दवाओं का सेवन करने वालें व्यक्तियों तथा उनके परिवारों को देखभाल और सहयोग प्रदान करने वाले क्षेत्र में कार्यरत योजना निर्माताओं और कार्यक्रम का कार्यान्वयन करने वालों द्वारा अनेक हस्तक्षे उपाय किए गए हैं।

मिज़ोरम में यह अभियान यूएनओडीसी द्वारा मिज़ोरम राज्य एड्स परिषद की सहभागिता से मिज़ोरम सरकार के माननीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री द्वारा 13 अक्तूबर, 2009 को शुरू किया गया था। नशीली दवाओं के विषय

मणिपुर में मल्टीमीडिया कार्यक्रम के दौरान उपस्थित प्रतिनिधि

पर विभिन्न कालेजों के रेड रिबन क्लबों के लगभग 98 सदस्यों ने नशीली दवाओं के विषय पर सघन समूह चर्चाओं में भाग लिया। एक गीत लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई और एचआईवी पर एक विषय–धुन तैयार की गई। राज्य और जिला स्तर पर अभियान से जुड़े विभिन्न सहभागियों में पुलिस, इंफॉर्मेशन और पब्लिक रिलेशंस, वाईएमए, एमएचआईपी, बीएसएनएल, रिलाएंस, एनवाईके, एनएसएस, डीडीके, एआईआर, एफओएनडब्ल्यूआईडीएपीसी (एनजीओ संघ), एमजेए तथा यूएनडीपी शामिल थे।

नशीली दवाओं, एचआईवी/एड्स एसटीआई तथा संयम के संबंध में 20,000 से अधिक लीफलेट तैयार किए गए और राज्य के सभी आठों जिलों में बांटे गए। जिला स्तर पर संगीत प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। मिज़ोरम के दल ने जिला स्तरीय समितियों का गठन किया जिनमें सरकारी कर्मचारी, प्रभाव डालने वाले व्यक्ति (गिरिजाघर के नेता) तथा संगीतज्ञ शामिल थे। प्रतियोगिता में सर्वोत्तम के भाग्य का निर्णय एसएमएस मतों के आधार पर लिया गया और सबसे चहेते फाइनलिस्ट ने 70000 एसएमएस मत प्राप्त किए।

यह राज्य स्तरीय विशाल कार्यक्रम 15 दिसंबर, 2009 को आइजोल में आयोजित किया गया था। 2000 से अधिक व्यक्तियों ने यह कार्यक्रम देखा तथा टेलीविजन पर इसका सीधा कवरेज लगभग तीन लाख दर्शकों ने देखा था। विजेताओं को बड़े–बड़े पुरस्कार प्राप्त हुए जिनमें आल्टो कार, हीरो होण्डा बाइक और स्कूटी शामिल थे।

रोड शो ने नागालैंड में अत्यधिक रुचि पैदा कर दी

नागालैंड में बहुमीडिया अभियान माननीय स्वास्थ्य मंत्री के मार्गदर्शन में नागालैंड राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी द्वारा कार्यान्वित किया गया था। ''एक गीत लिखें प्रतियोगिता'' मुक्त विज्ञापन के जरिये आयोजित की गई है जिसमें युवकों को एचआईवी/एड्स पर गीत लिखने के लिए प्रोत्साहित किया गया था। राज्य भर में संगीतज्ञों से कुल मिलाकर 60 प्रविष्टियां और प्रगीत प्राप्त हुए थे। चुने गए 10 सर्वोत्तम प्रगीतों को

नागालैंड में "लाइवड्राइव म्यूजिक आन मूव" का पुरस्कार समारोह

गीतों के रूप में तैयार किया गया तथा रचयिताओं और स्थानीय कलाकारों ने उन्हें गाया। कार्यक्रम की एक सीडी तैयार की गई तथा 26 नवंबर, 2009 को भारी करतल–ध्वनि के बीच उसका औपचारिक रूप से विमोचन किया गया।

नागालैंड में संगीत प्रतियोगिता 'लाइव ड्राइव म्यूजिक आन दि मूव' के विषय पर आयोजित की गई थी और अभियान को कार्यान्वित करने के लिए चुना गया फोरमैट था – रोड शो। माननीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री श्री कुजोल्यूजो निएनो द्वारा नागालैंड राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी लाइव ड्राइव को 10 नवंबर, 2009 को औपचारिक रूप से स्वीकार कर दिया गया।

ध्वनि परीक्षणों में 11 जिलों के कुल 76 बैंडों ने भाग लिया था। कस्बों के व्यस्त और भीड़भाड़ वाले हिस्सों पर इन लाइव शो का आयोजन किया गया था। जिला स्तरीय कार्यक्रमों के दौरान केएनपीपी+, पीएनपी+, डीएनपी+, जेडएनपी+, अन्य नेटवर्कों के सदस्यों तथा किपहायर के उपायुक्त ने एचआईवी/एड्स के बारे में तथा एचआईवी के साथ सकारात्मक रूप से जीने के बारे में बातचीत की। लाइव ड्राइव दल ने लगभग 1800 किलोमीटर दूरी तय की और वह 20 दिनों तक सड़क पर रहा।

राज्य स्तरीय प्रतियोगिता का अंतिम कार्यक्रम 18 दिसंबर, 2009 को कोहिमा में आयोजित किया गया जहां कार्यक्रम में लगभग 3000 व्यक्तियों ने भाग लिया।

नाको की संयुक्त सचिव, सुश्री आराधना जौहरी और संयुक्त निदेशक (आईईसी), श्री मयंक अग्रवाल भी इस 'ग्रैंड फिनाले' को देखने और विजेता कलाकारों को पुरस्कृत करने हेतु उपस्थित थे।

लाइव बैंड ने मणिपुर की सर्जक क्षमता को अंकित किया

मणिपुर राज्य घाटी और पर्वतीय क्षेत्रों, दोनों स्थानों पर राज्य में युवा लोगों तक पहुंच बनाने के लिए संगीत और खेलकूद प्रतियोगिताएं भी आयोजित कर रहा है।

■ प्राची गर्ग
सलाहकार (आईईसी),
राष्ट्रीय तकनीकी समर्थन यूनिट,
नाको
prachi.naco@gmail.com

एचआईवी के साथ जी रहे लोगों के लिए पूर्व-एआरटी तथा उपचारकालीन विधियां

एचएएआरटी (हाइली एक्टिव एंटीरिट्रोवाइरल ट्रीटमेंट) एचआईवी/एड्स के साथ जी रहे लोगों के लिए एक जीवनरेखा प्रमाणित हो रही है जो अब इतने स्वस्थ हो सकते हैं कि अपने काम पर वापिस लौट आएं और सामान्य जीवन जीना शुरू कर दें

एचआईवी संक्रमण के उपचार के लिए हाइली एक्टिव एंटीरिट्रोवाइरल ट्रीटमेंट (एचएएआरटी) का आगमन एचआईवी/एड्स की देखभाल में एक बड़ी घटना है। औषधियों का यह मिश्रण एचआईवी प्रजनन चक्र की विभिन्न अवस्थाओं को लक्षित करता है, एचआईवी रोग के बढ़ने को धीमा करता है, अवसरवादी संक्रमणों (ओआई) की संख्या में कमी लाता है, जीवन स्तर में सुधार लाता है और आयु बढ़ाता है।

एनएसीपी–III का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी पात्र पीएलएचआईवी के मामले में एआरटी यथाशीघ्र शुरू की जाए और वे सामान्य कार्य करने सहित नियमित जीवनशैलियां कायम रखने के योग्य हो सकें। यदि सीडी4 गणना 250 सेल/एमएम^3 से अधिक है तो एआरटी को तब तक के लिए स्थगित किया जाता है जब तक कि रोग की डब्ल्यूएचओ अवस्था III अथवा IV न हो जाए। रोग की डब्ल्यूएचओ IV अवस्था होने पर एआरटी शुरू कर दी जाती है चाहे सीडी4 गणना कुछ भी हो। जिन स्थितियों में रोगी एआरटी का पात्र नहीं है, उसे पूर्व–एआरटी देखभाल के लिए पंजीकृत कर लिया जाता है। यदि सीडी4 गणना 300 सेल/एमएम^3 से कम है तो एक महीने के भीतर सीडी4 गणना पुनः कराने की सिफारिश की जाती है। अन्य रोगियों (पूर्व एआरटी) के मामले में इस तरह की सिफारिश छः महीने में एक बार की जाती है।

एआरटी शुरू करने वाले सभी रोगियों को एआरटी के अलावा काट्रीमोक्साजोल (सीपीटी) रोगनिरोधन उपलब्ध कराया जाता है। जो रोगी रोग की डब्ल्यूएचओ अवस्था I अथवा II में हैं, उनके मामले में छः महीने के लिए कटआफ बिंदु के रूप में सीडी4 गणना 250 सेल/एमएम^3 होता है और जो रोगी रोग की डब्ल्यूएचओ III तथा IV अवस्था में हैं उनके मामले में छः महीने के लिए कटआफ बिंदु 350 सेल/एमएम^3 होता है।

एआरवी औषधियों के मोटे तौर पर तीन ऐसे समूह हैं जिनमें से एचएएआरटी के रेजिमेन का निर्माण करने के लिए इन औषधियों का चयन किया जाता है: न्यूक्लियोसाइड रिवर्स ट्रांसकिप्ट पेस इनहिबिटर (एनआरटीआई), नान–न्यूक्लियोसाइड रिवर्स ट्रांसकिप्टेस इनहिबिटर (एनएनआरटीआई) तथा प्रोटीज इनहिबिटर (पीआई)। प्रथम पंक्ति, वैकल्पिक प्रथम पंक्ति तथा दूसरी पंक्ति की रेजिमेन उपर्युक्त समूहों में से ली गई औषधियों का मिश्रण होती हैं।

सीडी4 मानीटरन और अनुवर्ती देखभाल

सीडी4 गणना (सेल/एमएम^3)	सीडी4 गणना दोहराएं
एचआईवी संक्रमण की पुष्टि हो जाने के बाद एआरटी सेंटर में पंजीकरण	बेसलाइन सीडी4 परीक्षण पर
250–300 (यदि एआरटी पर नहीं है तो)	बेसलाइन परीक्षण के एक महीने बाद
300–350 (यदि एआरटी शुरू नहीं की गई है तो)	तीन महीने पर
एआरटी पर (चाहे सीडी4 गणना कुछ भी हो)	छः महीने पर

एआरटी शुरू करने के लिए मार्गनिर्देश

डब्ल्यूएचओ नैदानिक अवस्था	सीडी4 गणना (सेल/एमएम^3)
I	इलाह करें यदि सीडी4 गणना 250 (यदि 251–350 है तो सीडी4 गणना चार सप्ताह पर दोहराएं)
II	
III	उपचार करें यदि सीडी4 गणना 350 है तो
IV	उपचार करें भले ही सीडी4 गणना कुछ भी हो

विशिष्ट स्थितियां

- **एचआईवी-टीबी सह-संक्रमण (इफैविरेंस आधारित रेजिमेन शुरू करें)**
  I. फुप्फुस टीबी तथा एचआईवीः संक्रमित जिन लोगों की सीडी गणना 350 सेल/एमएम है उनके मामले में शुरू में (2–8 सप्ताह) एटीटी सहन करने के बाद एआरटी शुरू करें (जिन रोगियों की सीडी गणना 50 सेल/एमएम3 है उनके उपचार को स्थगित कर दें)।
  II. फुप्फुस बाह्य टीबी तथा एचआईवीः सभी रोगियों के मामले में शुरू में (2 से 8 सप्ताह) एटीटी सहन करने के बाद एआरटी शुरू कर दें भले ही सीडी4 गणना कुछ भी हो।

- **एचआईवी तथा सगर्भताः पहली तिमाही में एफाविरेंज से बचें**
  I. डब्ल्यूएचओ अवस्था I तथा II: यदि सीडी4 गणना <250 सेल/एमएम^3 है तो एआरटी शुरू कर दें
  II. डब्ल्यूएचओ अवस्था II: यदि सीडी4 गणन <350 सेल/एमएम^3 है तो एआरटी शुरू कर दें (नेवीरेपीन के कारण प्रतिकूल प्रभावों का कड़ा मानीटरन करते हुए)
  III. डब्ल्यूएचओ अवस्था IV: एआरटी शुरू कर दें भले ही सीडी4 गणना कुछ भी हो।

प्रथम पंक्ति का एआरटी रेजिमेन ऐसा प्रारंभिक विधान है जोकि एआरटी के नए रोगी के लिए उस समय निर्धारित किया जाता है जबकि वह एआरटी शुरू करने के लिए राष्ट्रीय नैदानिक और प्रयोगशाला मानदंडों की पूर्ति करता हो।

दूसरी पंक्ति का एआरटी रेजिमेन पहले पंक्ति के उपचार के असफल हो जाने के बाद प्रयोग में लाए जाने वाला अगला रेजिमेन है।

यह देखा गया है कि जो रोगी पहली पंक्ति के एआरटी (एनआरटीआई तथा एनएनआरटीआई) आधारित जेनरिक पर हैं उनके भीतर राष्ट्रीय रेजिमेन के अधीन औषधियों के लिए विषालुता पैदा हो सकती है। स्वतंत्र एआरवी (आमतौर पर उसी श्रेणी के भीतर) का एकल औषधि प्रतिस्थापन का आशय विषालुता के लिए स्वतंत्र औषधियों, औषधि–औषधि

तीन अलग-अलग श्रेणियों से विभिन्न औषधियां

एनआरटीआई	एनएनआरटीआई	पीआई
जीडोवुडाइन (एजेडटी)*	नेविरापीन (एनवीपी)*	लोनाविर (एलपीवी)*
लैमीवुडाइन (3टीसी)*	एफाविरेंज (ईएफवी)*	रिटोनाविर (आरटीवी)*
स्टेवुडाइन (डी4टी)*	डेलाविरडाइन (डीएलवी)	सेक्विनाविर (एसक्यूवी)
टेनोफोविर (टीएफवी)*		इंडिनाविर (आईडीवी)
डिडानोसिन (डीडीएल)		नेलफिनाविर (एनएफवी)
जेलसीटाबीन (डीडीसी)		एम्प्रिनाविर (एपीवी)
अबाकाविर (एबीसी)		एटाजनविर (एटीवी)
एम्ट्रीसिटाबिन (एफटीसी)		फोसियमप्रेनाविर

*औषधियां जोकि राष्ट्रीय जेनरिक के अधीन हैं।

अन्योन्यक्रियाओं अथवा असहिष्णुता के लिए प्रतिस्थापन से है जो दूसरी पंक्ति के रेजिमेन का संकेत नहीं देती और उसे प्रतिस्थापन कहा जाता है।

पहली पंक्ति के रेजिमेन के चयन में औषधि की क्षमता, आनुषंगी प्रभावों की रूपरेखा, उपचार के भावी विकल्प खुले रखने की योग्यता, अनुपालन की सहजता, औषधि की लागत, गर्भावस्था के दौरान जोखिम तथा प्रतिरोधी विषाणु स्ट्रेन की उत्पत्ति की संभावना को ध्यान में रखा जाता है; और सभी परिस्थितियों में वर्तमान वैश्विक सिफारिश एक तिहरे औषधि रेजिमेन की जाती है।

क्षेत्रीय बाल चिकित्सा केन्द्र और उत्कृष्टता केन्द्रों की पहली बैठक का आयोजन

दूसरी पंक्ति की बाल चिकित्सा एआरटी की प्रभावी शुरूआत के लिए कदमों तथा मौजूदा केन्द्रों के कार्यचालन की समीक्षा की रूपरेखा प्रस्तुत की गई

नाको के क्षेत्रीय बाल चिकित्सा केन्द्रों (आरपीसी) तथा एचआईवी देखभाल में उत्कृष्टता केन्द्रों (सीओई) के बीच पहली बैठक नई दिल्ली में आयोजित की गई। इस बैठक की कार्यसूची के अधीन ये विषय शामिल थेः बाल एआरटी की दूसरी पंक्ति की शुरूआत के संबंध में चर्चा करना और तकनीकी तथा प्रचालनात्मक मार्गनिर्देशों को अंतिम रूप देना; आरपीसी के कार्यचालन की समीक्षा करना; उनके क्षमता निर्माण की योजना बनाना तथा उन्हें सीओई के रूप में स्तरोन्नत करना; 10 सीओईज में राज्य एड्स नैदानिक विशेषज्ञ पैनल (एसएसीईपी) के कार्यचालन की समीक्षा करना तथा उन्हें और अधिक प्रभावी बनाने के रास्ते ढूंढ़ना।

स्टेवुडाइन के साथ जुड़ी हुई दीर्घकालीन विषालुता को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय लिया गया कि राष्ट्रीय बाल एआरटी मार्गनिर्देशों के अधीन प्रथम पंक्ति की एआरटी के रूप में

नैदानिक असफलता; प्रतिरक्षणात्मक असफलता तथा जीवाणु असफलता की स्थिति में प्रथम पंक्ति के एआरटी की असफलता की पुष्टि की जाएगी

जीडोवुडाइन–आधारित रेजिमेन को वरीयता दी जाए और चरणबद्ध रूप में जीडोवुडाइन–आधारित रेजिमेन की मात्रा बढ़ाई जाए। यह भी स्पष्ट किया गया कि जीडोवुडाइन–आधारित रेजिमेन एचबी >9 ग्राम/डीएल से युक्त सभी नए सीएलएचआईवी में शुरू किया जाएगा तथा जो स्टेवुडाइन–आधारित रेजिमेन के तहत हैं और जिनके मामले में कोई विषालुता नहीं है, उन्हें वही स्टेवुडाइन रेजिमेन–आधारित उपचार दिया जाएगा।

नैदानिक असफलता; प्रतिरक्षणात्मक असफलता (प्रथम पंक्ति की एआरटी की असफलता का मूल्यांकन करते समय आयु के साथ सीडी4 मानों में दोनों सीडी4: ह्रासोन्मुखी बदलावों); तथा जीवाणु असफलता की स्थिति में प्रथम पंक्ति के एआरटी की असफलता की पुष्टि की जाएगी।

चर्चा बिंदु

- आरपीसी को सीओई के बराबर स्तरोन्नत करें।
- उपलब्ध डाटा के साथ कोहर्ट अध्ययन आयोजित करने के लिए सीओईज तथा आरपीसीज को शामिल करें।
- सीओईज तथा आरपीसीज टेली–मेडीसिन के माध्यम से अन्य एआरटी केन्द्रों का क्षमता निर्माण करें।
- आरपीसी बाल–आधारित सीसीसी के साथ संबंध स्थापित करें।
- राज्य सरकार के सहयोग से विशेष पाठ्यक्रम आयोजित करें।

■ डॉ सुकर्मा तंवर
तकनीकी अधिकारी (एआरटी)
नाको
sukarma.singh@gmail.com

सार्वजनिक सेवा घोषणा - "गायब" ने ध्यान आकृष्ट किया और जबरदस्त प्रतिक्रियाएं प्राप्त कीं

स्वैच्छिक एचआईवी परीक्षण के संबंध में संदेश देने के लिए नाको द्वारा लोकप्रिय फिल्मी सितारों का प्रयोग

जॉन्स हापकिन्स ब्लूमबर्ग स्कूल आफ पब्लिक हेल्थ सेंटर फार कम्यूनिकेशंस प्रोग्राम ने नाको के लिए ''गायब'' (हिंदी में जिसका अर्थ गुम हो जाना है) नामक टेलीविजन स्पाट के दो रूपांतर प्रस्तुत किए जिनमें बालीवुड के दो विख्यात सितारों–अनिल कपूर और सुष्मिता सेन को उतारा गया। कपूर हाल ही में इस कारण चर्चा में रहे थे

एड्स जागरूकता अभियान को बढ़ावा देती हुई सुष्मिता सेन

एक टीवी स्पाट जिसमें अभिनेता अनिल कपूर लोगों से एचआईवी परीक्षण कराने के लिए आग्रह करते हैं

क्योंकि उन्होंने आस्कर विजेता स्लमडाग मिलेनियर में एक प्रमुख भूमिका निभाई थी और सुष्मिता सेन भारत की पहली सौंदर्य साम्राज्ञी है जिसे मिस यूनिवर्स के टाइटल से नवाजा गया था और जो एक ऐसी अभिनेत्री है जिसे ''बौद्धिक रूप से सुंदर'' माना जाता है–दोनों ने इस कार्यक्रम में अपनी भूमिका प्रभावी रूप से निभाई।

मुंबई और दिल्ली में चलचित्रित यह स्पाट दूरदर्शन सहित टेलीविजन के सभी प्रमुख चैनलों पर प्रसारित किया गया था। एचआईवी के लिए इंटीग्रेटेड काउंसिलिंग एंड टेस्टिंग सेंटर (आईसीटीसी) में परीक्षण कराना इस घोषणा का मुख्य विषय था। यह स्पॉट शहरी और ग्रामीण–दोनों स्थितियों में प्रासंगिक है, लोगों को एक ऐसी सुविधा के बारे में अवगत कराता है जिससे कि एक मामूली से परीक्षण के माध्यम से आदमी एचआईवी जांच करा लेता है।

■ राजेश राणा
तकनीकी अधिकारी (आईईसी)
नाको
rajeshrananaco@gmail.com

मेरी आवाज: उच्च जोखिम समूहों (एचआरजी) के लिए एक सृजनात्मक मंच

स्वयं अपनी आवाज सुनना कभी भी इतना सुखदायी नहीं था जितना कि एचआरजी के लिए था

"मेरी आवाज" आवाजों का एक अनूठा समारोह था जिसमें एचआरजी इकट्ठे हुए थे और उन्होंने अपनी भावनाओं और संवेगों को शब्दों में बांधकर कलापूर्ण तथा सृजनात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की थी।

विशेष रूप से संकल्पित और तैयार किया गया यह कार्यक्रम यूएनडीपी, दिल्ली राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी तथा सीएफएआर के सहयोग से तथा नाको और यूएनएड्स के सहयोजन से 15 दिसंबर, 2009 को नई दिल्ली में इंडिया हैबीटेट सेंटर में आयोजित किया गया था।

समुदायों (एमएसएम, एफएसडब्ल्यू, आईडीयू और ट्रक ड्राइवरों सहित) के

ट्रांसजेंडरों द्वारा रचनात्मक प्रस्तुतियां

नेतृत्व में इस उत्सव ने इन समूहों को अपने व्यावसायिक और वैयक्तिक जीवन में रोजमर्रा के आधार पर जो मुद्दे पेश आते हैं उनमें से कुछ को प्रकाश में लाने के लिए नए और नवाचारी तरीके तलाश किए। मेरी आवाज/मेरा कंठ एक ऐसा निजी मंच बन गया जिसमें लोगों ने साहस, शक्ति, विपत्ति, रोष और आशा की व्यक्तिगत कहानियों का आदान–प्रदान किया। विभिन्न विषयों पर समुदायों के बीच और उनके आरपार बातचीत को बढ़ावा देना और संधारणीय नेटवर्क निर्माण का समर्थन करके इस कार्यक्रम ने इस तरह के और मंचों की जरूरत पर बल दिया।

■ एश पचौरी
निदेशक तथा सीईओ
सेंटर फार ह्यूमन प्रोग्रेस

राष्ट्रीय ट्रांसजेंडर-हिजड़ा परामर्श बैठक द्वारा कार्य-योजना की रूपरेखा प्रस्तुत

छः क्षेत्रीय कार्यशालाओं और एक राष्ट्रीय परामर्श बैठक के आधार पर यूएनडीपी एक ऐसी प्राथमिकता सूची लेकर आया है जिसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि ट्रांसजेंडरों/हिजड़ों को एचआईवी देखभाल प्राप्त हो और समान के नागरिकों की भांति उनका इलाज किया जाए।

भारत में ट्रासजेंडर और हिजड़ा समूह देश के भीतर मौजूद ऐसे सर्वाधिक यौन अल्पसंख्यक समूह हैं जो अभी भी अलग–थलग रहते हैं, जनता की दृष्टि में गंभीर रूढ़िबद्ध धारणाओं का शिकार बने हुए हैं। वे यौन, नृजातीय, लैंगिक और आर्थिक अल्पसंख्यकों के चौराहे पर हैं। यौन अल्पसंख्यकों के मुद्दों पर काम करने के लिए हाल ही में यूएनडीपी को प्रमुख यूएन एजेंसी के रूप में चिन्हित किया गया है।

इस दिशा में पहले उपाय के रूप में यूएनडीपी ने 30 अक्तूबर, 2009 को नई दिल्ली में एक राष्ट्रीय परामर्श बैठक आयोजित की जिसमें विभिन्न समुदाय–आधारित संगठनों के साथ–साथ एमएसएम और ट्रांस्जेंडर समुदाय के सदस्यों ने भाग लिया।

राष्ट्रीय परामर्श बैठक ने एचआईवी/एड्स देखभाल प्राप्त करने में (देखभाल की दिशा में बाधाएं, देखभाल की सुलभता को सुविधापूर्ण बनाने के लिए कार्यनीतियां) ट्रांस्जेंडरों और हिजड़ों को पेश आने वाली शक्तियों और चुनौतियों की; जो लांछन, भेदभाव तथा हिंसा वे सहन कर रहे है; उनके विधिक, नागरिक और राजनैतिक अधिकारों में कमियों; सामाजिक सुरक्षा का लाभ उठाने में पेश आ रही कठिनाइयों; एनएसीपी–III से जुड़े मुद्दों और सामुदायिक अभिप्रेरण तथा सुदृढ़ीकरण की एक रूपरेखा प्रस्तुत की।

नई दिल्ली में राष्ट्रीय ट्रांस्जेंडर परामर्श बैठक के सहभागी

राष्ट्रीय परामर्श की उपलब्धियां

1. सीमांतीकृत समुदायों की परिभाषा प्रस्तुत की गई

''ट्रांसजेंडर एक लैंगिक पहचान है, यह ऐसे व्यक्तियों के लिए एक छत्र शब्द है जोकि आमतौर पर जिस लैंगिक स्थिति के साथ पैदा हुए थे, उसके विपरीत लैंगिक स्थिति के व्यक्ति की तरह रहते हैं अथवा रहना पसंद करते हैं। उन्हें सामाजिक रूप से बहिष्कृत कर दिया जाता है और उनके अनेक यौन साथी होते हैं।''

'हिजड़े ऐसे व्यक्ति होते हैं जो हिजड़ा समुदाय से जुड़ने (स्वेच्छा से) के लिए प्रयासरत रहते हैं। उनका नृजातीय पेशा बधाई होता है लेकिन मौजूदा सामाजिक–आर्थिक सांस्कृतिक परिस्थितियों में उन्हें जीवित रहने के लिए भीख मांगने तथा यौनकार्य के लिए मजबूर किया जाता है। वे समुदाय के मानदंडों, रिवाजों तथा अनुष्ठानों के अनुसार, जो हर क्षेत्र में भिन्न–भिन्न होते हैं, जीवन जीते हैं।

2. एचआईवी निवारण तथा प्रशामक जरूरतों, सामाजिक और विधिक मान्यता, संकटकालीन हस्तक्षेप कार्यनीतियों तथा लिंग, जानकारी और संसाधनों पर हस्तक्षेपों पर सिफारिशें।

- हिजड़ों/ट्रांस्जेंडरों के लिए महत्वपूर्ण स्थानों पर एचआईवी प्रहरी निगरानी स्थल स्थापित करके एनएसीपी–III में कमियों की ओर ध्यान दें, एचआईवी निवारण और देखभाल हस्तक्षेपणीय उपायों का सांस्कृतिक दृष्टि से संगत पैकेज तैयार करने के लिए प्रचालन अनुसंधान करें; हिजड़ों/टीजी द्वारा संचालित सीबीओ की स्थापना के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करें; तथा प्रभावी कार्यक्रम कार्यान्वित करने के लिए उनका क्षमता निर्माण करें।
- वैयक्तिक स्तर के एचआईवी निवारण क्रियाकलापों से आगे बढ़ें तथा जोखिमों के संरचनात्मक निर्धारकों की तरफ ध्यान दें तथा एचआईवी हस्तक्षेप उपायों द्वारा जोखिमों के प्रभाव को मंदित करें।
- मानसिक स्वास्थ्य परामर्श; आत्महत्यापरक प्रवृत्तियों, पुलिस अत्याचार और गिरफ्तारी के संबंध में आपातिक हस्तक्षेपों, यौन तथा शारीरिक हिंसा के बाद सहयोग; अल्कोहल तथा नशीली दवाओं का दुरूपयोग; आजीविका कार्यक्रम।
- स्वास्थ्य देखभाल प्रदाताओं को हिजड़ों/ट्रांस्जेंडरों को एसटीआई/एचआईवी सेवाएं प्रदान करते समय सक्षम और संवेदनशील होना चाहिए तथा जेंडर ट्रांजिशन एंड सेक्स रिऐसाइनमेंट सर्जरी (एसआरएस) के मार्गनिर्देश तैयार करने चाहिए और उनका कार्यान्वयन मानीटर करना चाहिए।
- अस्पष्ट सेक्स रिऐसाइनमेंट सर्जरी के विधिक दर्जे को स्पष्ट करें और सरकारी अस्पतालों में लैंगिक अंतरण तथा एसआरएस सेवाएं निःशुल्क रूप से उपलब्ध कराएं।
- हिजड़ों/टीजी की लैंगिक पहचान की विधिक मान्यता को लेकर एक रुख बनाने की दिशा में कार्यबिंदु तैयार करें (स्वास्थ्य और सरकारी सेवाओं की सुलभता, मतदान करने का अधिकार, चुनाव में भाग लेने का अधिकार, शिक्षा का अधिकार, उत्तराधिकार अधिकार तथा विवाह और बच्चे गोद लेने जैसे नागरिक अधिकार)।
- जरूरतमंद हिजड़ों/ट्रांस्जेंडरों के लिए मौजूदा समाज कल्याण स्कीमें तैयार करना जो आवास तथा रोजगार की बुनियादी जरूरतें पूरी करती हों।
- नीति निर्माण और कार्यक्रम विकास में हिजड़ों/ट्रांस्जेंडरों का अधिक सहयोजन सुनिश्चित करना।

■ अर्न्स्ट नोरोना
कार्यक्रम अधिकारी–यौन अल्पसंख्यक
एचआईवी तथा विकास यूनिट
यूएनडीपी, इंडिया
Ernest.Noronha@undp.org

दोबारा से चलने और जीने की शक्ति प्राप्त करना

यह एक ऐसे व्यक्ति की साहसभरी कहानी है जिसकी नियति तो थी एक अपंग के रूप में जीना, किंतु जिसने इस सच्चाई को स्वीकार करने से इंकार कर दिया और जो अपने स्वास्थ्य लाभ और आशा की कहानी सुनाने को जिंदा है।

राजकुमार शर्मा की आयु 35 वर्ष के आसपास है लेकिन उसकी समझदारी उसकी उम्र को मात देती है। वह गर्व के साथ बताता है कि वह आग की तपिश से गुजरा है तथा कितना भी शारीरिक और मानसिक तनाव सहन कर सकता है। एक दुखी और दयनीय पीएलएचआईवी किस तरह एक ऐसे व्यक्ति में बदल गया जोकि सकारात्मक ऊर्जा से ओतप्रोत है, वह इस बदलाव की कहानी का आदान–प्रदान करना चाहता है जिससे कि उसकी तरह के अन्य लोग अपने अस्तित्व का एक अर्थ ढूंढने की आशा और प्रेरणा प्राप्त कर सकें। शारीरिक रूप से विकलांग होने, हाथ–पैरों के बेकाम हो जाने और पूरी तरह एक अपंग बन जाने की स्थिति से उठकर आज वह चलने और अपने शब्दों में अपनी कहानी कहने को मौजूद है।

प्रश्नः क्या आप हमें अपने बारे में कुछ बताएंगे?

उत्तरः मैंने मैट्रिक पास की है। मैं और आगे पढ़ना और नौकरी करना चाहता था लेकिन घरेलू दबावों के कारण मुझे पढ़ाई छोड़नी पड़ी। मेरे पिता एक खैराती अस्पताल में फार्मेसिस्ट थे और उन्हें घर का खर्च उठाने में दिक्कत पेश आ रही थी। अपने मामा के ट्रक के धंधे में आने से पहले मैंने छिटपुट नौकरियां की थी। मैंने ट्रक चलाना सीख लिया और भारी वाहनों की यांत्रिकी समझ ली और 1999 से मैं ट्रक चला रहा हूं।

प्रश्नः आपको यह कब पता चला कि आप एचआईवी पाजिटिव हैं?

उत्तरः मुझे 10 वर्ष पहले एचआईवी पाजिटिव पाया गया था। मुझे यौन तथा सुरक्षित यौन व्यवहार के बारे में बहुत कम जानकारी थी। हालांकि पुराने ट्रक ड्राइवरों ने एसटीआई से बचाव के लिए कंडोम का प्रयोग करने की सलाह दी थी लेकिन मैं उसका सही तरीके से इस्तेमाल करना नहीं सीख पाया। मुझे कंडोम मांगने में बहुत संकोच होता था। अंततः परिणाम यह

शारीरिक रूप से विकलांग होने, हाथ–पैरों के बेकाम हो जाने और पूरी तरह से अपंग बन जाने की स्थिति से उठ कर आज वह चल फिर सकता है और अपने शब्दों में अपनी कहानी करने के लिए मौजूद है।

हुआ कि मैं अधिकतर असुरक्षित यौन संबंधों में प्रवृत्त हो गया। दुर्भाग्य की बात यह है कि मेरी पाजिटिव स्थिति के बारे में समय पर नहीं पता चला सका।

जब मेरा स्वास्थ्य गिरना शुरू हुआ और मेरा वजन कम होने लगा, दस्तरोग तथा खांसी की बीमारी बार–बार घेरने लगी। मुझे मध्य प्रदेश के एक अस्पताल में ले जाया गया जहां मेरे पिता नौकरी करते थे। उन्होंने सिर्फ इन्फ्लुएंजा के लिए मेरा इलाज किया, एचआईवी का परीक्षण नहीं किया। जब मैं वजन घटने, थकावट और लंबी खांसी की शिकायत के साथ दोबारा अस्पताल गया मेरे एचआईवी पाजिटिव होने की पुष्टि हुई।

प्रश्नः क्या आप विवाहित हैं?

उत्तरः वर्ष 2000 में मेरा विवाह हो गया था और मेरे विवाह के छः महीने बाद यह पता चला था कि मैं एचआईवी पाजिटिव हूं। मेरे लिए सबसे बड़े दुख की बात यह है कि मेरे कारण मेरी पत्नी भी संक्रमित हो गई लेकिन मेरा परिवार और समुदाय अलग ढंग से सोचते थे। वे ऐसा समझते थे कि मेरी पत्नी दुष्चरित्र है और उसी ने एक अभिशाप की तरह मेरा बढ़िया स्वास्थ्य नष्ट कर दिया था। सच बोलने और अपनी पत्नी का साथ देने में मुझे बहुत सारा नैतिक और शारीरिक साहस जुटाना पड़ा था। लेकिन मुझे खुशी है कि मैंने यह किया।

प्रश्नः इन कठिन वर्षों में आपने स्थिति को कैसे संभाला?

उत्तरः अपने पिता के साथ थोड़े–बहुत झगड़े के बाद, हम दिल्ली में अपने भाई के घर चले गए। मैंने गाजियाबाद–नोएडा के व्यस्त मार्ग पर बस चलानी शुरू कर दी। लंबे समय तक काम करते रहने के कारण मेरे स्वास्थ्य और अधिक गिरने लगा। मैं अपने और अपनी पत्नी के चिकित्सा खर्च के लायक कमा लेता था। मेरे स्वास्थ्य में और अधिक गिरावट आने से परिवार की आय पर बोझ बढ़ गया और मुझे अपनी पत्नी के जेवर बेचने पर मजबूर होना पड़ा।

प्रश्नः अस्पताल और आपके परिवार की प्रतिक्रिया क्या थी?

उत्तरः हमारे मूल कस्बे में जो खैराती अस्पताल था, वह हमसे कटने लगा और हमें वीआईपी कमरे से हटाकर एक अलग स्टोर रूम में डाल दिया। वहां हमने कुछ सप्ताह का खराब समय बिताया, कोई भी हमें मिलने नहीं आता था, हमें दिल्ली स्थित आल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में जाने को कहा गया। तीन महीने के इलाज के बाद मेरा स्वास्थ्य और मेरी माली हालत––दोनों बिगड़ गए और मैं कौमा की स्थिति में पहुंच गया। मेरा सीडी4 गणक 8 था और मुझे यह बताया गया कि मैं फिर से चल नहीं सकूंगा। मैंने आत्महत्या करने का प्रयास किया, लेकिन कर नहीं सका। मुझे परामर्श दिया गया और कई महीने की देखभाल तथा सकारात्मक इन्पुट प्राप्त होने पर मैं बेहतर महसूस करने लगा। मैंने घुटनों के बल और सहारा लेकर लड़खड़ाकर चलना शुरू कर दिया। प्रत्येक कदम के साथ मेरे भीतर यह विश्वास पनपता था कि मैं और बेहतर ढंग से चल सकूंगा।

प्रश्नः सकारात्मक लोगों के दिल्ली नेटवर्क के साथ आपका अनुभव कैसा रहा?

उत्तरः डीएनपी (एचआईवी पाजिटिव व्यक्तियों का दिल्ली नेटवर्क) के साथ जुड़ने से मुझे एक नई जिंदगी प्राप्त हुई। यहां तक कि मैने 'हाथ से हाथ मिला' नामक टीवी सीरियल में काम किया। मैंने डाक्टरों, दाताओं, वित्तपोषी एजेंसियों, स्वयंसेवकों और सामाजिक कार्यकर्ताओं सहित अनेक व्यक्तियों के साथ वैचारिक

शेष पृष्ठ 27 पर

कल्याणी से मिली रणजीत को एक नई जिंदगी

कल्याणी कार्यक्रम से प्राप्त शक्ति और आशा के बल पर धैर्य और दृढ़ निश्चय के साथ एक दशक से अधिक से एचआईवी की पर नियंत्रण रखना

रणजीत दुबे 29 वर्ष का एक हट्टा–कट्टा युवक था और बीएसएफ का एक जवान होने के नाते, अपनी बटालियन तथा झारखंड में अपने मूल निवास हजारीबाग दोनों में आदर से देखा जाता था। कारगिल युद्ध में भाग लेने के कारण उसके मित्रों और समुदाय के बीच उसका रुतबा और बढ़ गया। लेकिन इस फिल्म जैसी बेजोड़ कहानी को उस समय एक जबरदस्त धक्का लगा जबकि एक रक्तदान शिविर में उसे एचआईवी पाजिटिव पाया गया। इस जानकारी के बाद वह टूट गया। उसे अपनी नौकरी के चले जाने तथा एक उत्तम जीवन साथी मिलने की संभावना खो देने का डर सताने लगा। जब उसके साथियों को उसके एचआईवी पाजिटिव होने की बाबत पता चला उन्होंने उसकी खिल्ली उड़ानी और ताने मारने शुरू कर दिए। इस अपमान को सहन न कर पाने के कारण उसने अपनी नौकरी छोड़ दी। कमजोरी तथा बार–बार दस्तरोग की जकड़ में आने के कारण उसके लिए नौकरी पर टिके रहना दुष्कर हो गया। एक बार होली के मौके पर शराब पीने के बाद उसकी हालत खराब होती गई। उसे अस्पताल में दाखिल किया गया। उसके परिवार को उसकी स्थिति मालूम हो गयी और उन्होंने उसे त्याग दिया। कुछ ही महीने में उसकी आर्थिक स्थिति खराब हो गई, वह पूरी तरह से एक टूटा हुआ कटु व्यक्ति बन गया था। एक बूढ़े आदमी ने उसे हजारीबाग में सीतागढ़ स्थित सामुदायिक

कल्याणी दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाला एक लोकप्रिय स्वास्थ्य कार्यक्रम है और इसे एचआईवी/एड्स संबंधी संदेश प्रसारित करने के लिए अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। यह कार्यक्रम जिस व्यापक पैमाने पर कार्य कर रहा है उससे प्रभावित होकर रंजीत ने उसमें भाग लिया, वह डॉक्टरों से मिला और उसने एचआईवी के साथ जीने वाले लोगों को बेहतर होते देखा।

देखभाल केन्द्र में जाने की सलाह दी।

रणजीत की जिंदगी में यह एक जबरदस्त मोड़ था। सामुदायिक केन्द्र में उसकी अपने स्वभाव से मिलते–जुलते लोगों के साथ मुलाकात हुई जिन्होंने उसे आशा और ताकत प्रदान की। उसे एक नौकरी मिल गई और समुदाय की एक बैठक में उसकी मुलाकात कल्याणी दल के साथ हुई। कल्याणी दूरदर्शन पर प्रसारित किया जाने वाला एक लोकप्रिय स्वास्थ्य कार्यक्रम है तथा उसे एचआईवी/एड्स संबंधी अपने संदेश प्रसारण के लिए कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। यह कार्यक्रम जिस बड़े पैमाने पर कार्य कर रहा था, उससे प्रभावित होकर रणजीत ने उनके कार्यक्रमों में भाग लेना, डाक्टरों से मिलना और एचआईवी के साथ जीने वाले लोगों को बेहतर होते देखना शुरू कर दिया।

यही वह मंच था जहां उसकी मुलाकात अपनी जीवन साथी चंचला देवी के साथ हुई। चंचला देवी अपने पति द्वारा, जोकि एक ट्रक ड्राइवर था, संक्रमित हुई थी। उसके पति की 2004 में मृत्यु हो गई थी जो उसे बुरी हालत में छोड़ गया था। उसके ससुराल वालों ने उसे दो बच्चों सहित घर से बाहर फेंक दिया। रणजीत उन बच्चों को अपनाने और उसके साथ शादी करने को तैयार था। 2009 में उनका विवाह हो गया और तबसे उनके हालात बेहतर होते रहे हैं। आज उसकी उम्र 39 वर्ष है, एक दशक से वह विषाणु सहित जीवन जी रहा है, अभी भी उसने एआरटी की शुरूआत नहीं की है। वह जेएनपी+ के अध्यक्ष के रूप में सक्रिय रूप से काम कर रहा है। रणजीत और उसकी पत्नी अपने आहार, पोषण और व्यायाम का ध्यान रखते हैं और उन्हें निराश हो जाने अथवा डर और मृत्यु की छाया में जिंदगी गुजारने का कोई कारण नहीं दिखाई देता। उन्हें लगता हैं कि कल्याणी ने उन्हें दूसरी जिंदगी प्रदान की है।

■ शशांक नारायण
उप निदेशक
विकास संचार प्रभाग, दूरदर्शन
shashanknarayan@yahoo.com

पृष्ठ 26 का शेष

दोबारा से चलने और जीने की शक्ति प्राप्त करना

आदान–प्रदान किया। मुझे यह पता चला कि एचआईवी पाजिटिव लोगों के लिए केवल भारत में ही नहीं, विश्व स्तर पर कितना कुछ किया जा रहा है और मैं भी एक छोटे तरीके से ही इस काम में योगदान दे रहा हूं। ऐसा करने से मुझे लगा कि मेरे जीवन का अर्थ है। साथ ही वहां मुझे जो प्यार और सहयोग प्राप्त हुआ, उसने पुनः और स्वयं अपने भीतर ईश्वर में मेरा विश्वास पैदा किया। आज की तारीख में मैं प्रायः सामान्य रूप से चल सकता हूं। मैं शारीरिक रूप से अधिक समर्थ हो गया हूं और मैं अपने आहार तथा आराम का ध्यान रख सकता हूं। मेरे समूचे अनुभव ने मुझे विनम्र बना दिया है। मैंने अपने जीवन के सर्वाधिक निराशापूर्ण दिन जिए हैं और मुझे पता है कि ऐसे दिन भी गुजर जाएंगे बशर्ते कि मनुष्य अपने आत्मसम्मान को ऊंचा रखे और सही काम करें।

■ आदित्य सिंह
तकनीकी अधिकारी (टीआई)
नाको

प्रेरणात्मक कार्यक्रम युवकों के हृदयों को थामे रहे

स्वैच्छिक रक्तदान शिविर, एचआईवी/एड्स के विरुद्ध नाको के संघर्ष उसके क्रियाकलापों का एक अभिन्न हिस्सा हैं। साथ ही यह राष्ट्रपिता महत्मा गांधी के जन्म दिवस से एक दिन पहले अर्थात 1 अक्तूबर, 2009 को पड़ने वाले विश्व रक्तदान दिवस के स्मरणोत्सव के रूप में भी है।

एक महीने लंबा एक राष्ट्रीय अभियान चलाया गया था जिसका उद्देश्य ऐसी जागरूकता पैदा करना था जोकि रक्त की कमी को दूर करने में मदद करेगी और सुरक्षित तथा उत्तम रक्त तथा रक्त घटकों की उपलब्धता सुनिश्चित करेगी। रक्तदान के क्षेत्र में कार्यरत सभी लोगों का उद्देश्य यह है कि लोगों को इस आशय का आश्वासन दिया जाए कि वे देश के भीतर वर्ष में किसी भी दिन किसी भी समय किसी भी कोने में सुरक्षित रक्त पा सकते हैं। सभी राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटियों द्वारा सभी आयु वर्गों, विशेष रूप से युवावर्ग को शामिल करके राष्ट्रीय स्वैच्छिक रक्तदान दिवस विभिन्न तरीकों से मनाया गया ताकि युवाओं तक रक्तदान करने तथा बार–बार रक्तदान करने वाला बनने का संदेश पहुंचाया जा सके।

राष्ट्रीय स्वैच्छिक रक्तदान दिवस के मौके पर बीबीसी वर्ल्डवाइड सर्विस ट्रस्ट द्वारा नाको के सहयोग से निर्मित 'बर्थ डे ब्वाय' नामक टेलीविजन विज्ञापन

"करके देखिये अच्छा लगता है" विज्ञापन का एक दृश्य

प्रसारित किया गया। युवकों को स्वैच्छिक रक्तदान करने के लिए आग्रह करने वाले विषय पर 'करके देखिए अच्छा लगता है' नामक हिंदी विज्ञापन प्रसारित किया गया जिसने लाखों लोगों के हृदयों को छू लिया। इसके द्वारा जो सकारात्मक संदेश प्रसारित किया गया, उसकी सराहना में देश के विभिन्न भागों से अनेक प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई हैं।

ग्रामीण और शहरी गुजरात में स्वैच्छिक रक्तदान क्रियाकलाप

राष्ट्रीय स्वैच्छिक रक्तदान दिवस (एनवीबीडीडी) सारे गुजरात में, कुछ स्थानों पर पहली बार आयोजित किया गया। संसाधनों को इकट्ठा करने, सभी आकार और रंगरूप के रक्तदान शिविर आयोजित करने के लिए अपना आश्वासन देने और अपना स्टाफ भेजने के लिए सीबीओ, एनजीओ तथा निगमित कार्यालय एकजुट हो गए। लगभग 80 आयोजकों को, जिन्होंने रक्तदान अभियान आयोजित करने में ब्लड बैंकों को सहयोग प्रदान किया था जिनके फलस्वरूप 2008–09 में आयोजित शिविरों के माध्यम से 1500 से अधिक यूनिटों का संग्रह किया गया था, सम्मानित किया गया।

स्वैच्छिक रक्त प्रोत्साहन के लिए जारी किए गए और व्यापक रूप से प्रसारित किए गए सात नए पोस्टरों के रूप में एक व्यापक आईईसी पहल शुरू की गई। 13 रक्त सचल वैनों अर्थात रक्तरथ यात्राओं को रवाना करना एक सामयिक पहल थी जोकि अर्द्ध–शहरी तथा ग्रामीण व्यक्तियों तक पहुंची। इन वैनों ने 1 अक्तूबर से 31 दिसंबर, 2009 की अवधि के बीच 100 से अधिक गांवों को कवर किया, ग्रामीण क्षेत्रों में स्वैच्छिक रक्तदान पर जागरूकता उत्पन्न की।

श्री रवि सक्सेना, प्रधान सचिव, स्वास्थ्य की अध्यक्षता में एक राज्य स्तरीय समारोह आयोजित किया गया। जिला स्तर पर सूरत में चार रैलियां आयोजित की गईं जिनमें 2000 से अधिक व्यक्तियों ने भाग लिया। अधिकांश जिलों में संगोष्ठियों, प्रशिक्षण शिविरों और प्रतियोगिताओं का आयोजन समारोह की मुख्य विशेषताएं थी। वराछा सहकारी बैंक द्वारा सूरत में छः रक्त बैंकों सहित एक विशाल रक्त शिविर का आयोजन किया गया जिसके फलस्वरूप रक्त की 3456 यूनिटों का संग्रहण किया गया।

वीबीडी अभियान के स्तरोन्नयन में राष्ट्र के साथ बिहार का सहयोग

नाको की सहायता से संचालित 17 रक्त बैंक इंडियन रेड क्रास सोसाइटी के सुपुर्द कर दिए गए। दोनों संगठनों के संयुक्त डाटाबेस से 1 अक्तूबर से 31 दिसंबर, 009 के दौरान समूचे राज्य के भीतर आयोजित विशेष वीबीडी शिविरों के लिए दाताओं और स्वयंसेवकों की स्वस्थ सहभागिता सुनिश्चित करने में मदद मिली।

जिस स्तर पर शिविरों का आयोजन किया था, उसे सुदृढ़ करने के लिए सिविल सर्जनों सहित सभी चिकित्सा कालेजों के अधीक्षकों ने अपने संसाधनों का संचय किया और अनेक शिविरों का स्वयं पर्यवेक्षण किया। उन्होंने रक्तदान करने वालों के साथ वैचारिक आदान–प्रदान किया, उनकी शंकाओं का समाधान किया और उन्हें बार–बार रक्तदान करने वाला बनने का आग्रह किया। लोगों से लोकप्रिय उत्सवों और समारोहों के दौरान शिविर आयोजित करने और यह सुनिश्चित करने का आग्रह किया गया कि राज्य में कभी भी रक्त की कोई कमी नहीं रहेगी।

छत्तीसगढ़ में वीबीडी में तेजी आई

राष्ट्रीय स्वैच्छिक रक्तदान दिवस के अवसर पर राज्य में अनेक क्रियाकलाप आयोजित किए गए। जागरूकता वार्ताएं और रक्तदान शिविर आयोजित करने के उद्देश्य से सभी जिला रक्त बैंकों ने रायपुर रेड क्रास सोसाइटी के साथ मिलकर काम किया। राज्य स्तर पर

4 सचल आईईसी वैन रवाना की गईं जिसके साथ राज्य में उनके 30 दिन के सफर के लिए विस्तृत मार्गचित्रण किया गया। एडवोकेसी कार्य के अंतर्गत एक नये टेलीविजन विज्ञापन का प्रसारण तथा अंग्रेजी और देशी भाषाओं के 24 समाचार–पत्रों में दिए गए विज्ञापन शामिल थे। प्रधान सचिव, स्वास्थ्य के साथ एक दिशा–अनुकूलन कार्यशाला तथा संवेदीकरण बैठक भी आयोजित की गई। इस बैठक में एनसीसी, एनवाईकेएस, रोटरी क्लब तथा लायंस क्लब के सदस्यों ने भाग लिया, जिन्होंने इस आशय के सुझाव दिए कि युवकों के विशाल समूहों को किस तरीके से सतत आधार पर कार्य में शामिल किया जाए। सांस्कृतिक क्रियाकलापों से आम निवासियों को रक्तदान अभियान में लाने में मदद मिली।

अंडमान में युवकों से बार–बार रक्तदान करने का आग्रह किया गया

पोर्ट ब्लेयर में 1 अक्तूबर, 2009 को एक स्वैच्छिक रक्तदान शिविर तथा रक्त प्रेरण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 250 छात्रों ने भाग लिया। जी. बी. पंत अस्पताल के वरिष्ठ रोगविज्ञानी डॉ. वाजिद अली शाह ने राष्ट्रीय स्वैच्छिक रक्तदान शिविर (एनवीबीडीडी) के महत्व के बारे में उपस्थित लोगों को संक्षेप में बताया। उन्होंने आग्रहपूर्वक यह कहा कि 45 किलोग्राम से अधिक वजन और 13 मिलीग्राम से अधिक होमोग्लोबीन गणना वाले 18–60 वर्ष के आयु वर्ग में सभी पात्र पुरुष और महिलाएं तीन महीने में एक बार रक्तदान करने में समर्थ होते हैं। छात्रों से वर्ष में एक बार अपने जन्म दिवस, वर्षगांठ अथवा किसी धार्मिक/गैर–धार्मिक अवसर जैसे महत्वपूर्ण दिनों को स्वस्थ और सुरक्षित रक्त का दान करने का आग्रह किया गया। एचआईवी/एड्स/एसटीआई तथा रक्तदान से संबंधित आईईसी सामग्री बांटी गई।

देहरादून के शानदार वीबीडी परिणाम

देहरादून की भीड़ भरी सड़कों पर रंगारंग रैलियों और यात्राओं से निवासियों के बीच नयापन और रुचि बढ़ गई, उनमें से अनेक पुलिस बैंड की धुनों के साथ–साथ चलते हुए यात्रा में शामिल हुए। प्रत्येक जिले में रक्तदान शिविरों से पहले जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। देहरादून में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम में प्रधान सचिव, चिकित्सीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मुख्य अतिथि थे। इस कार्यक्रम में उन छात्रों ने भाग लिया जिन्होंने पोस्टर तथा अन्य प्रतियोगिताओं में भाग लिया था। वर्दीधारी बलों के सदस्य बड़ी संख्या में उपस्थित हुए जिनमें इंडो–तिबेतन बार्डर पुलिस फोर्स (आईटीबीपी), सेना और पुलिस के प्रतिनिधि शामिल थे। दून अस्पताल से तथा हल्द्वानी, हरिद्वार, रुड़की, पौड़ी, काशीपुर, पिथौरागढ़, अल्मोड़ा और उत्तरकाशी के जिलों से स्वैच्छिक दक्तदान दिवस पर रक्त की 700 से अधिक इकाइयां एकत्र की गईं।

दिल्ली में शानदार क्रियाकलापों का आयोजन

दिल्ली राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी ने 1 अक्तूबर से 31 दिसंबर, 2009 तक आयोजित तीन महीने के लंबे अभियान के दौरान एनएसएस, एनवाईकेएस तथा अन्य युवा संगठनों जिन्होंने नियमित आधार पर ऐसे शिविर आयोजित करने का वचन दिया था, के सक्रिय सहयोग से 16 से अधिक वीबीडी शिविरों का आयोजन किया। दिल्ली मेट्रो रोड कार्पोरेशन और डीटीसी जैसे सार्वजनिक परिवहन निगमों ने जिनका बड़े पैमाने पर जनता के साथ संपर्क बना हुआ है यह कहा कि वे समय–समय पर विभिन्न आयु वर्गों के लोगों को रक्तदान अभियानों में शामिल होने के लिए प्रेरित करेंगे।

एक सुनियोजित प्रचार अभियान ने भावी दाताओं तक पहुंचने में मदद की। इन दाताओं की संख्या पिछले वर्षों की तुलना में अधिक उत्साहपूर्ण थी। कुल मिलाकर इस आशय का अहसास था कि वे लोग एक महान कार्य में लगे हुए हैं और यह कार्य विशाल स्तर पर सर्वहिताय है। एनवीबीडीडी के मौके पर प्रमुख समाचार–पत्रों में विज्ञापनों के माध्यम से 1 और 2 अक्तूबर को आयोजित किए जाने वाले शिविरों के विवरणों की घोषणा की गई। दिल्ली में 250 स्थानों (कालेज, संस्थान, स्कूल) पर लगाए गए छोटे आकार के होर्डिंगों ने जिन पर वीबीडी के संबंध में बुनियादी जानकारी के साथ–साथ प्रेरणात्मक नारे निर्दिष्ट किए गए थे, लोगों का ध्यान आकृष्ट किया।

''कैच देम यंग'' विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई जिसमें युवकों के बीच वीबीडी की अवधारणा का सुदृढ़ीकरण करने के उद्देश्य से वार्ताएं और सत्रों का आयोजन किया गया। 100 बार रक्तदान करने वालों सहित नियमित रक्तदान करने वालों को सम्मानित करना, एक भावपूर्ण कार्यक्रम था जिसमें अनेक बार–बार रक्तदान करने वालों ने भ्रांतियों का निराकरण किया और इस बात पर चर्चा की कि किस तरह उनके आत्मसम्मान को प्रोत्साहन मिला था।

वीबीडी के संदेश नागा युवकों तक ले जाए गए

नागालैंड राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी 1 अक्तूबर, 2009 को दीमापुर में एक

राष्ट्रीय स्वैच्छिक रक्तदान दिवस पर रक्तदान करते हुए एक स्वैच्छिक कार्यकर्ता

राष्ट्रीय स्वैच्छिक रक्तदान दिवस पर रक्तदान करते हुए उत्तर प्रदेश के माननीय स्वास्थ्य मंत्री, श्री अनंत कुमार मिश्रा

राज्य स्तरीय समारोह का और कोहिमा तथा मोकोकचंग में जिला स्तरीय कार्यक्रमों का आयोजन करके एनवीबीडीडी मनाने में बाकी देश के साथ जुड़ गई।

चिकित्सा अधीक्षकों, चिकित्सा अधिकारियों तथा कालेजों के प्रिंसिपलों ने समारोह में भाग लिया और दीमापुर में एक सभा को संबोधित किया। रक्तदान से जुड़ी भ्रांतियों का निराकरण किया गया और युवकों से नियमित रक्तदान करने वाले लोगों की तरह बनने के लिए प्रेरित करने का प्रयास किया गया।

ऐसे 12 संस्थानों को प्रशंसा प्रमाण–पत्र प्रदान किए गए जिन्होंने 2008–09 के दौरान रक्तदान शिविरों का आयोजन किया था। उच्च माध्यमिक और कालेज स्तर के छात्रों के वास्ते नागालैंड एड्स नियंत्रण सोसाइटी द्वारा एक नारा प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस कार्यक्रम का समापन एक वीबीडी शिविर के साथ हुआ जिसमें 32 स्वयंसेवकों ने आगे बढ़कर रक्तदान किया।

इसी तरह का एक समारोह मोकोकचंग में आयोजित किया गया जिसमें स्वैच्छिक रक्त दाताओं से रक्त के 20 यूनिटों का संग्रहण किया गया। नागा हास्पिटल अथारिटी, कोहिमा में भी एक स्वैच्छिक रक्तदान शिविर आयोजित किया गया जिसमें 200 व्यक्तियों ने भाग लिया। 13 संस्थानों को प्रशंसा–पत्र प्रदान किए गए। 10 से अधिक स्वयंसेवकों ने रक्तदान किया और 34 व्यक्तियों के लिए रुधिर वर्ग निर्धारित किए गए। इस अभियान का उद्देश्य यह था कि नियमित रक्तदान करने वाले जिस अत्यधिक संतोष और गर्व का अनुभव करते हैं उसे एक दूसरे के साथ बांटा जाए तथा बड़ी संख्या में लोगों को इस जोशीले और सुखद समुदाय का अंग बनाया जाए।

रांची में ग्रामीण युवकों तक पहुंचना

एक सार्थक पहल के रूप में ग्रामीण क्षेत्र में युवकों को प्रेरित करने की इच्छा रांची में स्वास्थ्य विभाग का एक मूल प्रयोजन था। एक प्रेरणात्मक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें गांव और अर्द्ध ग्रामीण क्षेत्रों से 100 लड़कों और लड़कियों को आने और वीबीडी के संदेश को ग्रहण करने और अपने समुदायों के बीच उसका प्रसार करने के लिए आमंत्रित किया गया। इस अभियान के फलस्वरूप अनेक अनुत्तरित प्रश्नों को तार्किक और वैज्ञानिक ढंग से सुलझाया गया और रक्त के लगभग 1000 यूनिटों का संग्रहण किया गया।

सिक्किम के रेड रिबन क्लब द्वारा वीबीडी के निमित्त प्रयास

पूर्वी, पश्चिमी, दक्षिणी और उत्तरी जिलों के एनजीओ तथा आरआरसी के सक्रिय सहयोग से सिक्किम में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। सभी आयु वर्गों और लक्षित लाभग्राहियों के लिए क्रियाकलापों का आयोजन करने का विशेष ध्यान रखा गया। पोस्टर, निबंध, प्रश्नोत्तरी तथा रंगमंच प्रतियोगिताओं ने स्वैच्छिक रक्तदान के विभिन्न पक्षों को समाहित किया और वीबीडी शिविरों में बड़ी संख्या में रक्तदान करने वाले लोग आए। एसबीटीसी तथा रक्त कोषों के सहयोग से कुल मिलाकर 4 वीबीडी शिविर आयोजित किए गए तथा दक्षिण और पूर्वी जिलों के आरआरसी द्वारा रक्त के 75 यूनिटों का दान दिया गया।

उत्तर प्रदेश मासिक रक्तदान शिविरों का आयोजन करेगा

उत्तर प्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी ने सभी 71 जिलों में 1 अक्तूबर, 2009 को एनवीबीडीडी का आयोजन किया। माननीय स्वास्थ्य मंत्री श्री अनंत कुमार मिश्रा ने डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल, लखनऊ में आयोजित विशाल स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का उद्घाटन किया तथा मीडिया कर्मियों, डाक्टरों, चिकित्सा स्टाफ, सुरक्षा बलों और आम जनता को संबोधित किया। उन्होंने घोषणा की कि हर महीने की पहली तारीख को वीबीडी शिविर आयोजित किए जाएंगे, इस घोषणा का गर्मजोशी से स्वागत किया गया।

इस कार्यक्रम से पहले एक महीने तक ऐसे क्रियाकलाप किए गए थे जिनके माध्यम से युवकों के ''रक्तदान दूत'' बनने की जरूरत पर जागरूकता और संवेदनशीलता का सृजन किया गया था। इस बात पर भी बल दिया गया था कि निवासी स्वयं अपने समुदायों के बीच रक्तदान अभियानों का आयोजन कर सकते हैं और उनमें भाग ले सकते हैं।

राज्य सरकार ने रक्तदान के प्रयोजन को अपेक्षित प्रोत्साहन दिया जिसके लिए इस विषय को विभिन्न मंचों पर उठाया गया और यह स्पष्ट किया गया कि रक्तदान सामाजिक कार्यसूची का एक अंग है। जिला मजिस्ट्रेट की अध्यक्षता में जिला स्तर पर अंतःक्षेत्रीय बैठकें आयोजित की गईं। मुख्य सचिव द्वारा सभी आयुक्तों, जिला मजिस्ट्रेटों (डीएम), मुख्य चिकित्सा अधिकारियों (सीएमओ) तथा मुख्य चिकित्सा अधीक्षकों को पत्र भेजे गए। वीडियो सम्मेलनों के माध्यम से डीएम और सीएमओ को अपने–अपने क्षेत्रों में इस तरह के अभियान और आंदोलन चलाने को कहा गया।

जिला स्तरीय योजनाओं ने उपायों की रूपरेखा प्रस्तुत की और मीडिया विज्ञापनों तथा आईईसी सामग्री के व्यापक वितरण के माध्यम से रक्तदान के महत्वपूर्ण पक्षों की बाबत एडवोकेसी की। 1 अक्तूबर, 2009 को अकेले लखनऊ में रक्त के 592 यूनिटों का संग्रहण किया गया और 732 पंजीकरण किए गए। सफल स्वैच्छिक रक्तदान आंदोलन के फलस्वरूप रक्त की लगभग 2557 इकाइयों का संग्रहण हुआ और 6642 पंजीकरण किए गए।

पश्चिम बंगाल द्वारा दाताओं और स्टाफ को सुविधापूर्ण बनाया गया

पश्चिम बंगाल में एनवीबीडीडी के मौके पर दोहरे समारोह आयोजित किए गए जिनमें पश्चिम बंगाल स्वैच्छिक रक्तदान मंच के 21वें स्थापना दिवस का आयोजन शामिल था। इस कार्यक्रम की एक अनूठी विशेषता यह थी कि रक्त कोष के स्टाफ को राज्य में रक्तदान अभियान के ''अकीर्तित सिपाहियों'' के रूप में सम्मानित किया गया।

इस मंच ने अपने जिला संयोजकों के माध्यम से अनेक स्थानों पर इस दिवस का आयोजन किया। 46 दिन लंबे इस अभियान का उद्घाटन माननीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री डॉ. सूर्यकांत मिश्रा द्वारा 15 अक्तूबर को किया गया जिसमें उन्होंने लोगों से पूरे वर्ष लेकिन 15 सितंबर से 31 अक्तूबर के बीच की अवधि के दौरान नए बल सहित

रक्तदान अभियान आयोजित करने और रक्तदान करने की विशेष अपील की। उन्होंने विशेष रूप से निवासी कल्याण संघों और निगमित निकायों को अपने परिसरों में शिविर आयोजित करने तथा विभिन्न आयु वर्गों और प्रोफाइल के दाताओं को अभिप्रेरित करने का आग्रह किया।

विशेष रेडियो और दूरदर्शन कार्यक्रमों की संकल्पना की गई और उन्हें इस अवधि के दौरान टेलीविजन/रेडियो पर प्रसारित किया गया। महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्थलों पर होर्डिंगों के माध्यम से सार्वजनिक प्रचार किया गया जिसमें विभिन्न प्रेरणात्मक संदेशों से युक्त विशेष बल देने वाले बैनर और पोस्टर लगाए गए। टेलीविजन और रेडियो पर प्रमुख समय पर प्रसारित उपग्रह चैनलों पर 30 मिनट चलने वाले एक साप्ताहिक कार्यक्रम के प्रसारण से पहली बार रक्तदान करने वाले अनेक लोगों के बीच बहुत रुचि पैदा हुई और उन्होंने स्वेच्छा से रक्तदान किया।

200 से अधिक आरआरसी ने जिलों में रक्तदान के संबंध में कार्यशालाओं और शिविरों का आयोजन किया जिनमें राजनैतिक नेताओं से समर्थित एक विशाल युवा लहर दौड़ती दिखती थी।

वीबीडी को प्रोत्साहित करने के लिए रेड क्रास सोसाइटी टीएनएसीएस के साथ

तमिलनाडु स्टेट ट्रांसफ्यूजन काउंसिल तथा चेन्नई एड्स प्रिवेंशन तथा कंट्रोल सोसाइटी के सहयोग से तमिलनाडु राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी ने 1 अक्तूबर, 2009 को चेन्नई में कालीवनार अरंगम में एक समारोह में 1 अक्तूबर, 2009 को एनवीबीडीडी का आयोजन किया जिसमें स्वास्थ्य विभाग और स्थानीय प्रशासन के कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

राज्य स्तरीय समारोह में नियमित स्वैच्छिक रक्तदान करने वालों को सम्मानित किया गया। जिन व्यक्तियों ने 50, 75, 100 तथा 125 बार रक्तदान किया था उन्हें विभिन्न पुरस्कार प्रदान किए गए। जिन प्रशिक्षण संस्थानों, उच्च निष्पादन करने वाले रक्त कोषों और संस्थानों ने एक ऐसी संस्कृति का निर्माण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी जिसमें स्वैच्छिक रक्तदान को स्वीकृति प्राप्त हुई थी और उसे एक सकारात्मक क्रियाकलाप समझा गया था, स्वास्थ्य और कल्याण के हित में उनके योगदान के लिए उनकी सराहना की गई। साथ ही अनुकंपा, भ्रातृत्व और बलिदान की भावनाओं का प्रसार करने के लिए भी उनका साधुवाद किया गया।

भारतीय रेड क्रास सोसाइटी की सहभागिता से तमिलनाडु के प्रत्येक जिले में एनवीबीडीडी का आयोजन किया गया जहां रक्तदान शिविरों के आयोजन के साथ–साथ रक्तदान शिविरों के आयोजकों और रक्त दाताओं को मानवता के प्रति उनकी सेवा के लिए सम्मानित किया गया।

- राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटियों से प्राप्त जानकारी सहित

तमिलनाडु में विश्व एड्स दिवस कार्यक्रम के अवसर पर आयोजित एक प्रहसन

केरल राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी को मिला वेबसाइट के लिए ई-अभिशासन पुरस्कार

आनलाइन परामर्श को लोगों से अच्छी प्रतिक्रिया प्राप्त हुई

केरल राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी की प्रतिष्ठा को उस समय चार चांद लग गए जब इसकी औपचारिक वेबसाइट को केरल सरकार द्वारा 2008 के लिए ई–अभिशासन पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। इस वेबसाइट को वेबसाइट श्रेणी में ई–अभिशासन पुरस्कार प्राप्त हुआ था और इसे तीसरी सर्वोत्तम वेबसाइट माना गया था। केरल पर्यटन विभाग की वेबसाइट को पहला पुरस्कार प्राप्त हुआ और उसी श्रेणी में आईटी मिशन केरल वेबसाइट को दूसरी सर्वोत्तम वेबसाइट माना गया।

केरल राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी वेबसाइट www.ksacs.in को 2006 में तैयार किया गया था और इसका उद्देश्य यह था कि जनता को और लक्षित समूहों को केरल राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी के क्रियाकलापों तथा एचआईवी/एड्स के विरुद्ध इसके अभियान से अवगत कराया जाए।

तीन वर्षों से अधिक की अवधि के दौरान इस वेबसाइट ने अपने कार्यक्षेत्र का विस्तार किया है और आज की तारीख में यह वेबसाइट केवल केरल राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी के क्रियाकलापों से संबंधित जानकारी का प्रसारण ही

केरल राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी वेबसाइट www.ksacs.in 2006 में तैयार की गई थी और इसका उद्देश्य यह था कि जनता को और लक्षित समूहों को केरल राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी के क्रियाकलापों तथा एचआईवी/एड्स के विरुद्ध इसके अभियान से अवगत कराया जाए।

नहीं करती, बल्कि जनता और पीएलएचआईवी के साथ प्रभावी रूप से वैचारिक आदान–प्रदान भी करती है।

यह साइट केरल राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी के अधीन कार्यरत सेवा केन्द्रों के ब्यौरे उपलब्ध कराती है। अब यह साइट नए विकास कार्यों और कार्यक्रमों को जनता तक ले जाने का एक प्रभावी माध्यम बन गई है। यह वेबसाइट एचआईवी निवारण संदेशों और सेवा संबंधी अभियानों के प्रसार में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है।

वेबसाइट के ''आनलाइन परामर्श'' खंड को उपभोक्ताओं से जोकि बहुविध विषयों पर अपनी शंकाएं भेजते हैं, उत्तम प्रतिक्रिया प्राप्त होती है। उनकी शंकाओं का समाधान, यौन स्वास्थ्य, प्रश्नों और एचआईवी/एड्स के बारे में जानकारी केरल राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी के विशेषज्ञों द्वारा दी जाती है।

एचआईवी/एड्स के साथ जुड़े लांछन और भेदभाव जिसके कारण लोगों को अपनी शंकाएं व्यक्त करने में संकोच महसूस होता है इस वेबसाइट ने लोगों को अपनी शंकाएं व्यक्त करने और स्पष्टीकरण मांगने में सहायता करने की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में काम किया है। और भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि यह लोगों की गोपनीयता को बनाए रखती है।

मस्कॉट होटल तिरुवनंतमपुरम में 8 दिसंबर, 2009 को आयोजित एक समारोह में केरल राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी के संयुक्त निदेशक (आईईसी), श्री एस. अजय कुमार को केरल राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी की तरफ से केरल के मुख्यमंत्री श्री वी. एस. अच्युतानंदन से पुरस्कार प्राप्त हुआ।

सुश्री नीला गंगाधरन, मुख्य सचिव, केरल ने समारोह की अध्यक्षता की। श्री अजय कुमार, प्रधान सचिव, सूचना प्रौद्योगिकी, श्री आनंद पार्थासारथी, जूरी सदस्य, श्री विशाल धूपर, प्रबंध निदेशक, सार्क क्षेत्र, सीमेंटी कार्पोरेशन तथा श्री सी. पी. अजुमाल, संकाय, इंस्टीट्यूट आफ मैनेजमेंट इन गवर्नमेंट ने इस अवसर पर भाषण दिए।

अपने स्वागत भाषण में श्री. कुमार ने कहा कि केरल राज्य ई–अभिशासन पुरस्कार 2008 विजेता एजेंसियों ने अत्यंत नागरिक–अनुकूल कंप्यूटरीकरण परियोजनाओं का प्रदर्शन किया है। इन्होंने सरकारी कार्यालयों के कामकाज के तरीके में उच्च स्तरीय प्रभाविता और पारदर्शिता का परिचय दिया है जिससे कि आम आदमी की मदद की जा सके।

विख्यात पत्रकार और जूरी सदस्य श्री आनंद पार्थासारथी ने केरल राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी वेबसाइट की सराहना की और कहा कि यह वेबसाइट मात्र प्रदर्शन से आगे बढ़ गई है और संवेदनशीलता तथा व्यावसायिक विशेषज्ञता से युक्त जानकारी का प्रसार करती है।

■ एस. अजय कुमार
संयुक्त निदेशक (आईईसी)
केरल राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी
jdiec.ksacs@gmail.com

कर्नाटक में दो–दिवसीय पारस्परिक विचार–विमर्श कार्यक्रम के दौरान वक्ताओं का एक पैनल

सैटकॉम ने कर्नाटक में पीएलएचआईवी को एकजुट कर उनका सशक्तीकरण किया

मांग पत्र में पीएलएचवी के मूल अधिकारों को स्पष्ट किया गया

यह एक अनूठा कृत्रिम उपग्रह–आधारित कार्यक्रम था जिसमें कर्नाटक में एचआईवी पाजिटिव लोगों के 29 जिला नेटवर्कों को अपने अधिकारों और हकदारियों की बाबत नीति–निर्माताओं के साथ विस्तार से वैचारिक आदान–प्रदान करने और बातचीत करने का अवसर मिला।

27–28 अक्तूबर, 2009 को आयोजित इस दो–दिवसीय पारस्परिक विचार–विमर्श कार्यक्रम का उद्देश्य 1200 नेटवर्क सदस्यों को एक सामान्य परिकल्पना लक्ष्य प्रक्रिया में भाग लेने को सुविधापूर्ण बनाना था। इसका आयोजन केएनपी+ तथा जिला स्तरीय नेटवर्कों द्वारा कर्नाटक राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी और केएचपीटी के सहयोग से किया गया। कार्यक्रम मैसूर में सैटकॉम केन्द्र में आयोजित किया गया जिसे एकतरफा वीडियो और दोतरफा श्रृव्य संचरण के लिए 2002 में इसरो के सहयोग से संचालित किया गया था।

कार्यक्रम का उद्घाटन कर्नाटक राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी के परियोजना निदेशक श्री आर. जानू द्वारा किया गया जिन्होंने एक अधिकार–आधारित दृष्टिकोण पर बल दिया जिससे कि पीएलएचआईवी को राज्य में उपलब्ध सेवाएं प्राप्त करने में समर्थ बनाया जा सके। साथ ही उन्होंने नेटवर्कों द्वारा इस कार्यक्रम को व्यापक बनाने के लिए सामूहिक जिम्मेदारी लेने की जरूरत की ओर ध्यान आकर्षित किया।

राज्य के प्रत्येक जिले में लांछन और भेदभाव और पीएलएचआईवी द्वारा स्वास्थ्य सेवाओं की सुलभता के मुद्दों पर चर्चा करने के लिए राज्य के प्रत्येक जिले में 35 पीएलएचआईवी इकट्ठे हुए।

श्री अशोकानंद, निदेशक, एडवोकेसी, केएचपीटी ने कहा कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य ''नेटवर्कों को सशक्त बनाना, प्रत्युत्तर तैयार करने तथा प्रश्न पूछने और संगत उत्तर मांगने के अधिकार में समर्थ बनाना है''। सहभागियों की ओर से स्वास्थ्य देखभाल केन्द्रों में लांछन पर केन्द्रित अनेक प्रश्न पूछे गए पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए डॉ. श्रीनिवास, राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (एनआरएचएम) ने यह विश्वास दिलाया कि प्रजनन और बाल स्वास्थ्य (आरसीएच) अधिकारियों को ''संवेदीकृत और सूचित'' किया जा चुका है।

एचआईवी के साथ जी रही महिलाओं ने एकल अभिभावक होने और परिवारों द्वारा ''बहिष्कृत'' किए जाने के कारण मिलने वाले लांछन के फलस्वरूप अपनी आय के साधनों को लेकर चिंता व्यक्त की।

एचआईवी के साथ जी रहे बच्चों के मामले में बुनियादी और उन्नत शिक्षा प्राप्त करने के उनके स्वप्न को साकार करना सर्वाधिक महत्वपूर्ण विषय था। दावणगेरे से आए एक लड़के ने एआरटी

पीएलएचआईवी के लिए कृत्रिम उपग्रह–आधारित कार्यक्रम के दौरान सहभागी

शेष पृष्ठ 34 पर

गोवा में रेड रिबन क्लब का उद्घाटन

शैक्षिक संस्थानों से जबरदस्त प्रतिक्रिया

नवंबर और दिसंबर के महीने गोवा राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी के लिए एक व्यस्त वर्षांत के महीने थे। राज्य के भीतर विभिन्न औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (आईटीआईज), सेंट एंड्रयूज हायर सेकेंडरी स्कूल, वास्को तथा पुलिस ट्रेनिंग स्कूल, वालपोई में 12 रेड रिबन क्लब (आरआरसी) स्थापित किये गये। जिन आईटीआईज में आरआरसी स्थापित की गई उनमें लनाई, मापूसा, बिचोलिम, होंडा, मार्गोवा, वास्को, फर्मागुड़ी, परनेम, काकोरा तथा कानाकोना स्थित आईटीआईज शामिल थीं।

सभी शैक्षिक संस्थानों ने आरआरसी की स्थापना में सक्रिय सहयोग का परिचय दिया। संबंधित संस्थानों के छात्रों, स्टाफ और प्रिंसीपलों ने गोवा राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी अधिकारियों द्वारा आयोजित सत्रों में भाग लिया जिनमें उन्होंने एचआईवी/एड्स के बारे में जागरूकता का निर्माण किया तथा आरआरसी के लक्ष्यों और उद्देश्यों पर प्रकाश डाला।

■ दिनांतिका झा
सहायक निदेशक (पीडीसी)
गोवा राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी
goaaids@gmail.com

राज्य के भीतर 12 रेड रिबन क्लब (आरआरसी) स्थापित किए गए

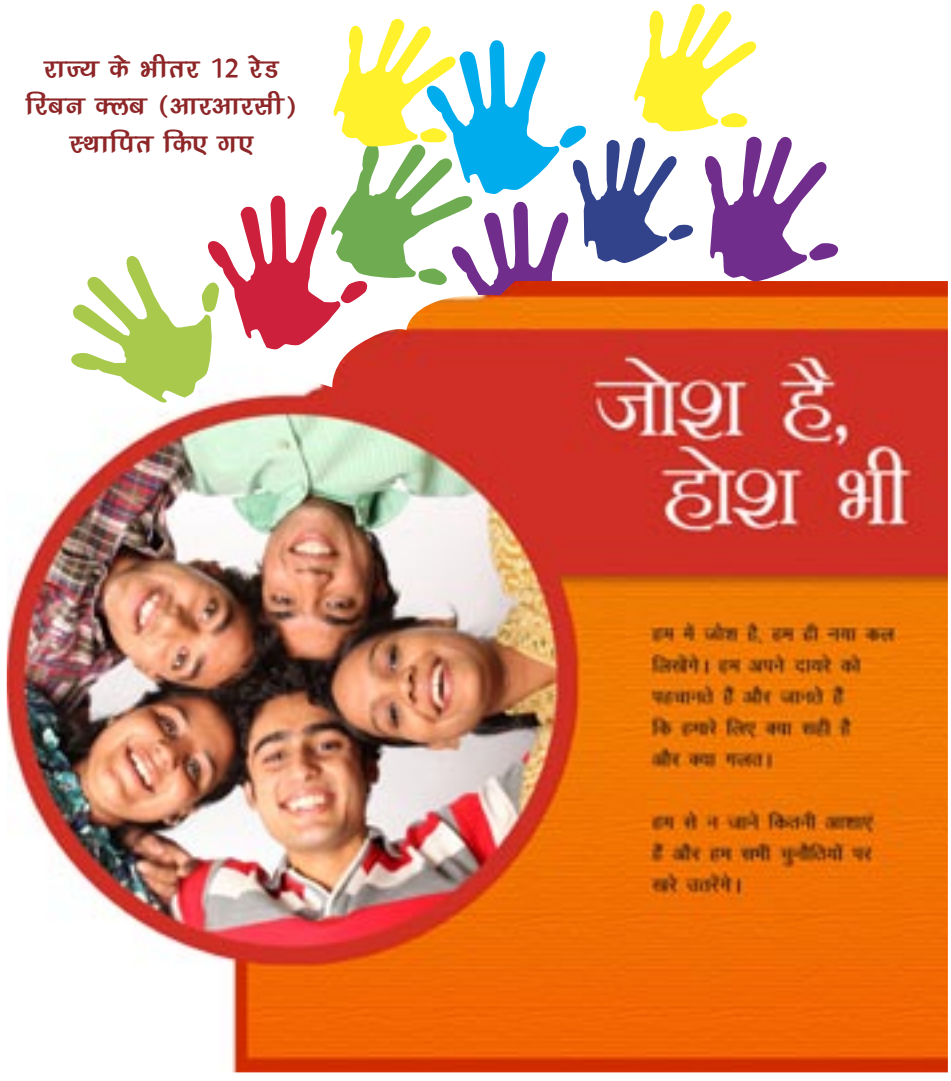

पृष्ठ 33 का शेष

सेटकाम ने कर्नाटक में पीएलएचआईवी को एकजुट किया और समर्थ बनाया

के तहत बच्चों की उच्चतर पोषणिक जरूरतों की ओर ध्यान आकृष्ट किया और यह पूछा कि क्या कोई ऐसी स्कीम है जोकि उनकी पोषणिक जरूरतों को पूरा कर सके।

बच्चों ने अपनी शैक्षिक संभावनाओं की बाबत सर्व शिक्षा अभियान तथा महिला और बाल विकास विभाग के अधिकारियों के साथ बातचीत की।

इस दो–दिवसीय कार्यक्रम ने पीएलएचआईवी के बुनियादी अधिकारों को व्यक्त करने वाला एक मांग–पत्र भी तैयार किया।

राज्य के प्रत्येक जिले में लांछन और भेदभाव, पीएलएचआईवी द्वारा स्वास्थ्य सेवाओं की सुलभता, सामूहिकीकरण तथा नेटवर्क सुदृढ़ीकरण, अधिकार तथा सामाजिक हकदारियों, अनाथों और असहाय बच्चों तथा एफएसडब्ल्यू और एमएसएम जैसे सीमांतीकृत पीएलएचआईवी के मुद्दों पर चर्चा करने के लिए राज्य के प्रत्येक जिले में 35 पीएलएचआईवी एकत्र हुए।

सभी जिलों के पीएलएचआईवी समुदाय के सदस्यों के अनुसार यह कार्यक्रम उनके समुदाय की सामूहिकीकरण प्रक्रिया के समेकन की दिशा में एक बड़ी कार्रवाई थी।

केएनपी+ की अध्यक्षा सरोजा पुथम द्वारा इस कार्यक्रम का समुचित रूप से संक्षेपण किया गया जिन्होंने कहा कि ''यह नेटवर्क केवल हमारी जरूरतों को व्यक्त करने, हमारी शिकायतों का वर्णन करने का ही एक मंच नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा तंत्र भी है जो एचआईवी पाजिटिव लोगों को उपलब्ध उपचार, देखभाल और सहयोगात्मक सेवाएं प्राप्त करने में समर्थ बनाता है।''

■ मोहन, एचएल
केएचपीटी
mohan@khpt.org

एनएसीपी–III में ट्रक चालकों के लिए हस्तक्षेप कार्यक्रमों को मुख्यधारा में लाना और व्यापक बनाना

राष्ट्रीय ट्रक चालक एचआईवी रोकथाम कार्यक्रम देश के भीतर 23 राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटियों द्वारा 130 ट्रांसशिपमेंट स्थलों के माध्यम से कार्यान्वित किया जाएगा।

नाको ने यह महसूस किया है कि भारत में एचआईवी की रोकथाम और नियंत्रण के लिए ट्रक चालकों के लिए हस्तक्षेप–कार्यक्रम एक महत्वपूर्ण घटक हैं। जोखिमपूर्ण आबादी के बीच एचआईवी के प्रसार पर काबू पाने के लिए 'कवच' के कार्यक्रम दृष्टिकोण से प्रेरित होकर नाको ने ट्रक चालक कार्यक्रमों को मुख्यधारा में लाने और उन्हें व्यापक बनाने के लिए तकनीकी सहायता समूह के रूप में ट्रांसपोर्ट कार्पोरेशन आफ इंडिया फेडरेशन (टीसीआईएफ) के साथ संपर्क किया है।

लंबी दूरी तय करने वाले ट्रक चालकों के बीच एचआईवी/एड्स के प्रसार को रोकने के लिए 'आह्वान' के अनुदान के तहत टीसीआईएफ द्वारा दिसंबर, 2003 में शुरू की गई परियोजना 'कवच' ने आज की तारीख में राष्ट्रीय राजमार्गों पर 15 सर्वाधिक विशाल प्रभाव स्थलों पर हस्तक्षेप किए हैं। इस कार्यक्रम ने हाल ही में इन सभी स्थानों पर विश्व स्तर की प्रमाणित एचआईवी रोकथाम सेवा का, जिनमें बीसीसी, उपचारयोग्य एसटीआई का इलाज तथा कंडोम प्रोत्साहन शामिल है, समकालिक और मानकीकृत पैकेज तैयार किया है।

राष्ट्रीय ट्रक चालक, एचआईवी रोकथाम कार्यक्रम देश भर में 23 राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटियों द्वारा 130 ट्रांसशिपमेंट स्थलों के माध्यम से कार्यान्वित किया जाएगा। इन लक्ष्यों की पूर्ति एसटीआई के उपचार के लिए नैदानिक सेवाओं और कंडोम प्रोत्साहन के प्रावधान सहित बीसीसी के साथ पड़ाव बिंदु पर सेवाओं के बुद्धिमत्तापूर्ण विस्तार द्वारा की जाएगी।

लंबी दूरी तय करने वाले ट्रक चालकों के बीच एचआईवी/एड्स के प्रसार को रोकने के लिए 'आह्वान' के अनुदान के तहत टीसीआईएफ द्वारा दिसंबर, 2003 में शुरू की गई परियोजना 'कवच' ने आज की तारीख में राष्ट्रीय राजमार्गों पर 15 सर्वाधिक विशाल प्रभाव स्थलों पर सघन हस्तक्षेप किए हैं। इस कार्यक्रम ने हाल ही में इन सभी स्थानों पर विश्व स्तर की प्रमाणित एचआईवी रोकथाम सेवा का, जिनमें बीसीसी, उपचार योग्य एसटीआई का इलाज तथा कंडोम प्रोत्साहन शामिल है। समकालिक और मानकीकृत पैकेज तैयार किया है।

कार्यक्रम के उद्देश्य

- सभी हस्तक्षेप क्षेत्रों में कार्यक्रम के अंतर्गत आने वाली क्लीनिकों में एसटीआई उपचार, रोकथाम तथा परामर्श हेतु सेवा–प्राप्ति को प्रोत्साहन करके एसटीआई की व्याप्ति कम करना।
- कंडोम के प्रयोग को बढ़ाना।
- बीसीसी के माध्यम से सुरक्षित यौन तौर–तरीकों को बढ़ावा देना।

परियोजना का कार्यक्षेत्र

- एक राष्ट्रीय रणनीति के रूप में ट्रक चालक हस्तक्षेप–कार्यक्रमों का निरीक्षण और समर्थन।
- मौजूदा हस्तक्षेप–कार्यक्रमों उपायों की समीक्षा करना और आईएमआरबी सर्वेक्षण से उपलब्ध डाटा का तथा राज्य–वार विस्तार योजना के लिए हाल में आयोजित सूक्ष्म स्तरीय योजना डाटा का प्रयोग करना।
- एचआईवी जागरूकता, अंतः व्यक्ति संप्रेषण (आईपीसी) और मुख्य हितधारकों के साथ एडवोकेसी के अलावा एसटीआई देखभाल, कंडोम वितरण और आईसीटीसी में रेफरल की दृष्टि से गुणवत्तापूर्ण सेवा सुनिश्चित करना।
- आईटी कार्यान्वयन साझेदारों को क्षमता निर्माण सहयोग उपलब्ध कराना, उनको परामर्श देना तथा निर्धारित आपूर्तियोग्य और कार्यक्रम बेंचमार्कों के संदर्भ में विभिन्न प्रमुख क्रियाकलापों की नियमित मानीटरिंग और मूल्यांकन।

टीएसएल क्या होते हैं?

टीएसएल ऐसे स्थान होते हैं जहां ट्रक चालक बड़ी संख्या में नियमित आधार पर कम से कम 2–3 दिन के लिए इकट्ठा होते हैं। 10–15 दिन के औसत चक्र समय के अनुसार प्रतिमाह 2–3 दौरे इस तरह के हो जाते हैं और यह आमतौर पर माल लादने/उतारने के लिए होते हैं।

तथ्य तालिका

- भारत में लगभग 50 लाख ट्रक चालक है।
- लगभग 20 लाख (40%) लंबी दूरी (अथवा इंटर–सिटी) तय करते हैं।
- घर से लंबे समय तक दूर रहने, युवा और यौन दृष्टि से सक्रिय होने और कामकाज की कठिन परिस्थितियों से जूझना–ऐसे कारण हैं जो जोखिमपूर्ण व्यवहार का मार्ग प्रशस्त करते हैं।
- लंबी दूरी वाले ट्रक चालक किसी भी महीने में 8000–10000 किलोमीटर की दूरी तक ट्रक चलाते हैं।
- लंबी दूरी वाले ट्रक चालकों में एचआईवी की व्याप्ति शहर के भीतर ट्रक चलाने वालों (2%) की तुलना में 3.5 गुना (7%) है।
- लंबी दूरी वाले ट्रक चालकों में एचआईवी/एड्स की समग्र व्याप्ति कथित रूप से 4.6% है जबकि आम जनता में 0.36% है।

■ आदित्य सिंह
तकनीकी अधिकारी (टीआई)
aditya.s1982@gmail.com

मुख्य संकेतकों के निर्माण पर यूएनएड्स मार्गनिर्देश

इस दस्तावेज का उद्देश्य ऐसे कोर संकेतकों की बाबत प्रमुख जानकारी उपलब्ध कराना है जोकि एड्स के प्रति देश की जवाबी कार्रवाई की प्रभाविता नापते हैं। ये मार्गनिर्देश देश के स्तर पर जिस डाटा का संग्रहण किया जाता है उसकी गुणवत्ता और सुसंगति में सुधार लाने के प्रयोजन से तैयार किए गए हैं। इन संकेतकों में राष्ट्रीय प्रतिबद्धता तथा कार्रवाई संकेतक, राष्ट्रीय कार्यक्रम संकेतक, ज्ञान और व्यवहार संकेतक तथा प्रभाव संकेतक शामिल हैं। इन संकेतकों से एचआईवी/एड्स पर प्रतिबद्धता को घोषणा में निर्धारित वैश्विक लक्ष्यों की बेहतर समझ विकसित करने में भी मदद मिलेगी।

विवरण के लिए संपर्क करें
http://data.unaids.org/pub/manual/2009/JC676_Core_Indicators_2009_en.pdf

बच्चों के लिए एचआईवी जांच और प्रकटन के सुविधाकरण में बाधाओं और चुनौतियों पर रिपोर्ट

ऐलायंस इंडिया द्वारा आंध्र प्रदेश और मणिपुर में किए गए प्रचालन अनुसंधान के लक्षित बच्चे 0–6, 7–14 तथा 15–18 आयुवर्ग में थे और इस अनुसंधान का लक्ष्य ऐलायंस इंडिया द्वारा 2007 में शुरू की गई चाहा परियोजना के मार्ग में प्रस्तुत मौजूदा चुनौतियों को समझना है। यह अध्ययन ऐसे तत्व अभिज्ञात करने के प्रति केन्द्रित है जोकि समुदाय को स्वयं अपने बच्चों का एचआईवी परीक्षण कराने तथा बच्चों को एचआईवी की स्थिति के प्रकटन से संबंधित मुद्दों को समझने से रोकते हैं। साथ ही यह अध्ययन, इन मुद्दों की ओर ध्यान देने के लिए व्यावहारिक समाधान तैयार करने में अध्ययन के निष्कर्षों का प्रयोग करने पर केन्द्रित है ताकि नीति और व्यवहार के बीच संबंध स्थापित करने वाले व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत किए जा सकें।

विवरण के लिए संपर्क करें
http://www.aidsallianceindia.net/Main/ViewPublication.aspx?id=1280

स्टेट आफ वर्ल्ड पापुलेशन, 2009

दि स्टेट आफ वर्ल्ड पापूलेशन का 2009 का अंक जलवायु परिवर्तन के मुद्दे को जनसंख्या गतिशीलता, निर्धनता और लैंगिक समानता से जोड़ता है। रिपोर्ट इस तथ्य की ओर इंगित करती है कि एचआईवी/एड्स की भावी गति समाज की, केवल यही नहीं कि संक्रामक रोगों में वृद्धि के प्रति पर बल्कि खाद्य और जल की कमियों, और अधिक गहन झंझावातों तथा जलवायु संबंधी अन्य प्रभावों के प्रति अनुकूलित होने की समाज की क्षमता पर निर्भर करेगी। इस रिपोर्ट में महिलाओं को अपने आपको जलवायु परिवर्तन के प्रति अभिप्रेरित करने में सामर्थ्यवान बनाए जाने की जरूरत पर बल दिया गया है।

विवरणों के लिए संपर्क करें
http://www.unfpa.org/swp/

स्टेट आफ दि वर्ल्ड्स चिल्ड्रन

संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा बाल अधिकारों पर समझौता अपनाए जाने की 20वीं वर्षगांठ 29 नवंबर, 2009 को मनाई गई। इस दस्तावेज में 18 वर्ष से कम आयु के व्यक्तियों की देखभाल, उपचार और सुरक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय मानक निर्धारित किए गए हैं। स्टेट आफ दि वर्ल्ड्स चिल्ड्रन का विशेष संस्करण समझौते के निर्माण, बाल अधिकारों की पूर्ति की दिशा में प्रगति, चुनौतियों का तथा सभी बच्चों के लिए प्रतिबद्धता की पूर्ति सुनिश्चित करने के लिए की जाने वाली कार्रवाई के अध्ययन के प्रति समर्पित है।

विवरण के लिए संपर्क करें
http://www.unicef.org/publication/index_51772.html

मिसिंग पीसिज (राष्ट्रीय परामर्श की रिपोर्ट)

मिसिंग पीसिज, भारत में यौन अल्पसंख्यकों की एचआईवी संबंधी जरूरतों और समस्याओं के बारे में 24–25 अक्तूबर, 2008 को आयोजित दो–दिवसीय राष्ट्रीय परामर्श पर एक रिपोर्ट है। इस परामर्श में एमएसएम तथा टीजी समुदाय, दाता, सरकारी कार्मिक, नाको, राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी, कार्यक्रम योजना निर्माता और कार्यान्वयनकर्ता शामिल थे। यह रिपोर्ट एचआईवी तथा यौन अल्पसंख्यकों से जुड़े हुए मुद्दों की बाबत एनएसीपी–III को केन्द्रित तकनीकी और वित्तीय सहयोग उपलब्ध कराने के वास्ते यूएनडीपी को नाको, यूएनएड्स तथा समुदाय के प्रतिनिधियों के साथ काम करने में सहायक होगा।

विवरण के लिए संपर्क करें
http://data.undp.org.in/hiv/MSM_Publications.pdf

ह्यूमन डेवलपमेंट रिपोर्ट 2009

दि ह्यूमन डेवलपमेंट रिपोर्ट (एचडीआर) 2009–ओवरकमिंग बैरियर्सः ह्यूमन मोबिलिटी एंड डेवलपमेंट–पहली एचडीआर है जिसने प्रवास के मुद्दे तथा मानवीय गतिशीलता के प्रति बेहतर नीतियां किस प्रकार मानवीय विकास को बढ़ावा दे सकती हैं––इस मुद्दे की खोज की। यह रिपोर्ट सीमाओं के भीतर तथा सीमाओं के पार आने–जाने पर सरकार के प्रतिबंधों में कमी लाने का पक्षपोषण करती है ताकि मानवीय विकल्पों और स्वतंत्रता को बढ़ावा दिया जा सके। यह रिपोर्ट प्रवासियों द्वारा गंतव्य स्थान पर पहुंचने पर उनकी संभावनाओं में सुधार लाने के लिए ऐसे व्यावहारिक उपायों का तर्क देती है जोकि गंतव्य स्थल समुदायों और साथ ही उद्गम स्थलों––दोनों को लाभान्वित करेंगे।

विवरण के लिए संपर्क करें
http://hdr.undp.org/en/reports/global/hdr2009/

स्वास्थ्य क्षेत्र में प्राथमिकतापूर्ण एचआईवी/एड्स हस्तक्षेपों को व्यापक बनाने पर रिपोर्ट

सर्वसुलभ उपलब्धता के लक्ष्य के संदर्भ में डब्ल्यूएचओ प्रगति रिपोर्ट 2009 एचआईवी निवारण, उपचार और देखभाल के लिए सर्वसुलभ उपलब्धता के अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर समर्थित लक्ष्य की दिशा में 2009 में प्राथमिकतापूर्ण स्वास्थ्य क्षेत्र हस्तक्षेपणीय उपायों के स्तरोन्नयन की दिशा में प्रगति के बारे में विश्व स्तर पर अद्यतन स्थिति सूचित करती है। यह रिपोर्ट बताती है कि हालांकि कुछ साक्ष्य अनेक स्थितियों में एचआईवी हसतक्षेपणीय उपायों की सुलभता में विस्तार का संकेत देते हैं, एचआईवी के उच्च जोखिम वाले आबादी समूहों को स्वास्थ्य देखभाल सेवाएं प्राप्त करने में अभी भी तकनीकी, विधिक और सामाजिक–सांस्कृतिक कठिनाइयां पेश आती हैं। भारत का सरकारी क्षेत्र का निःशुल्क एंटीरिट्रोवाइरल चिकित्सा कार्यक्रम जो 2004 में शुरू हुआ था और जिसके साथ डब्ल्यूएचओ द्वारा अनुशंसित वैश्विक रोगी मानीटरन साधनों पर आधारित मानक राष्ट्रीय रोगी मानीटरिंग प्रणाली जुड़ी हुई है, इस रिपोर्ट में उसका विशेष उल्लेख किया गया है।

विवरण के लिए देखें
http://www.who.int/hiv/pub/2009progressreport/en/

चिल्ड्रन एंड एड्स

चिल्ड्रन एंड एड्स चौथी पर्यावलोकन रिपोर्ट जोकि दिसंबर, 2009 में प्रसारित की गई थी उसमें एड्स द्वारा प्रभावित महिलाओं, बच्चों और युवकों के लिए की गई प्रगति और सेवाओं के स्तरोन्नयन में पेश आ रही चुनौतियों पर बल दिया गया है और इसमें सभी देशों को प्रभावित करने वाली आर्थिक कठिनाइयों के बीच एकजुट कार्रवाई और सत्त प्रतिबद्धताओं के लिए आग्रह किया गया है। इस रिपोर्ट में माताओं, शिशुओं, बच्चों और युवकों का आयु तथा लिंग विशिष्ट डाटा, मौजूदा ज्ञान, उभरते हुए साक्ष्य तथा बच्चों के लिए वैश्विक प्रतिक्रिया में क्या काम करता है, उसके उदाहरण, कार्रवाई के लिए ऐसी सिफारिशें प्रतिपादित की गई हैं जोकि बच्चों के कल्याण में सुधार ला सकती हैं और बच्चों के वास्ते सर्वसुलभ उपचार, देखभाल और सहयोग के लक्ष्य की पूर्ति के लिए जरूरी अपनी प्रतिबद्धताओं और निवेश जरूरतों को पूरा रखने में राष्ट्रों की मदद कर सकती हैं।

विवरण के लिए देखें:
http://www.unicef.org/publications/index_51902.html

एचआईवी/एड्स से बचाव

स्वयंसेवी समूहों (एसएचजी) के लिए मार्गदर्शिका। ''प्रोटक्टिंग लाइव्स फ्राम एचआईवी/एड्स'' एक पैंफलेट है जोकि एचआईवी, इसके प्रसार तथा इसके निवारण से संबंधित जानकारी प्रदान करता है। साथ ही यह पैंफलेट पड़ोस में उपलब्ध ऐसी स्वास्थ्य सुविधाओं के ब्यौरे भी उपलब्ध कराता है जहां तक एचआईवी परीक्षण, उपचार और सामाजिक सहयोग के लिए पहुंचा जा सकता है। एचआईवी के निवारण में और उसके साथ–साथ महिलाओं और बालिकाओं के अधिकार सुनिश्चित और सुरक्षित रखने में एसएचजी सदस्यों की भूमिका प्रतिपादित की गई है और उस पर बल दिया गया है जिससे कि सकारात्मक बदलाव लाया जा सके।

विवरण के लिए देखें:
http://www.nacoindia.org

संवेदनशील स्ट्रोक

एक चित्रकार जिसके ब्रश के संवेदनशील स्ट्रोक एचआईवी के साथ जी रहे लोगों के बीच प्रेरणा और आशा उत्पन्न करते हैं।

संतोष शर्मा जयपुर की एक कलाकार हैं। वे अपने कैनवस का प्रयोग बाल विकास और महिला सशक्तीकरण के क्षेत्र में एक बदलाव तथा संचार के माध्यम के रूप में करती हैं। उनका ध्यान कुष्ठ रोग, टीबी और एचआईवी/एड्स जैसे गलत समझे गए रोगों से जुड़े लांछन और भेदभाव को कम करने के लिए कला और दृश्य प्रतिबिंबों के प्रयोग पर रहता है। उनकी परोपकारी कार्य में बेसहारा और विभिन्न प्रकार के विकलांग बच्चों के लिए प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन शामिल है।

विभिन्न स्थानों और स्थितियों में समुदाय के सहयोजन और विभिन्न कार्यशालाओं के माध्यम से आपने एचआईवी के विषय पर प्रदर्शनियों और कार्यक्रमों की एक श्रृंखला का आयोजन किया है। उनकी कलाकृतियां ऐसी महिलाओं के दर्द को समेटती हैं जिनकी उनके परिवारों द्वारा उपेक्षा की गई है, अलग कर दिया गया है और दुर्व्यवहार किया गया है। यह ऐसे अनाथ बच्चों की स्थिति को व्यक्त करती हैं जोकि एचआईवी से संक्रमित और प्रभावित हैं और जिन्हें उप–मानवीय स्थितियों में जीने के लिए मजबूर किया जाता है। उनकी कुछ कलाकृतियां ऐसे बहादुर व्यक्तियों के माध्यम से आशा और सकारात्मकता का परिचय भी देती हैं जो व्यवस्था के विरुद्ध लड़ सकते हैं, अपने पैरों पर खड़े हो सकते हैं और दुर्बल लोगों की तरफ से उनका समर्थन कर सकते हैं और समान अधिकारों की मांग कर सकते हैं।

संतोष ऐसा महसूस करती हैं कि कला एक ऐसा सशक्त माध्यम है जोकि संवेगों को व्यक्त करने और सही और गलत के बीच के अंतर को स्पष्ट करने में मदद कर सकता है। संतोष के अनुसार लोग यहां तक कि जो अनपढ़ हैं वे भी कला के प्रति स्वतःस्फूर्त ढंग से प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।

RAJIV GANDHI FOUNDATION
NACO
रेड रिबन एक्सप्रेस
एचआईवी/एड्स और स्वास्थ्य से जुड़े आपके हर सवाल का जवाब है यहाँ.
पूरी जानकारी ही है पूरी सुरक्षा.
विश्व एड्स दिवस पर, एड्स के विरूद्ध
भारत
INDIA
एकजुट
بھارت
रेड रिबन एक्सप्रेस
ज़िन्दगी ज़िन्दाबाद!

रेड रिबन एक्सप्रैस: मार्ग मानचित्र

प्रमुख संपादक: सुश्री आराधना जौहरी, संयुक्त सचिव
संपादक: श्री मयंक अग्रवाल, संयुक्त निदेशक (आईईसी)
संपादक दल: डॉ डी. बचानी, उप महानिदेशक (सीएसएंडटी), डॉ एस. वेंकटेश, उप महानिदेशक (आरएंडडी एवं एमएंडई), डॉ एम. शौकत, सहायक महानिदेशक (बीएस), डॉ ए.के. खेरा, सहायक महानिदेशक (एसटीडी एंड लिक वर्कर), डॉ नीरज ढ़ींगरा, सहायक महानिदेशक (टीआई,) डॉ संध्या काबरा, सहायक महानिदेशक (प्रयोगशाला सेवा और गुणवत्ता आश्वासन), श्री एम.एल. सोनी, अवर सचिव (आईईसी)

नाको समाचार राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन (नाको), स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार की पत्रिका है।
नवीं मंजिल, चंद्रलोक बिल्डिंग, 36 जनपथ, नई दिल्ली – 110 001. टेलिः 011–23325343; फैक्सः 011–23731746, www.nacoonline.org

संकलन, रूपांकन और मुद्रण – न्यू कान्सेप्ट इंफोरमेशन सिस्टम्स प्रा. लि., नई दिल्ली
यूएनडीपी की सहायता से मुद्रित